आपका भविष्य

पं. कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं. हंसराज शर्मा

मेष : व्यय अति अधिक, चिंता काफी रहेगी, लाभ कुछ कम, दौड़ धूप बेकार जाएगी, यात्रा न करें, परिश्रम द्वारा किए काम सफल होंगे, आमदनी का मार्ग प्रशस्त होगा, नई सूझ-बूझ से लाभ।

वृष : व्यवसायिक क्षेत्र से लाभ होगा, नया काम न करें, वाद-विवाद से बचें, मिश्रित फल प्राप्त होंगे, वैर-विरोध से बनते कामों में बाधा, घरेलू, चिन्ता, यात्रा सफल पर करें सावधानी से,।

मिथुन : किसी गम्भीर उलझन के सुलझने से खुशी, श्रम द्वारा काम बनेंगे, विशेष सफलता मिलेगी, लाभ अच्छा, लेकिन यात्रा में कष्ट या परेशानी, गृहस्थी के कामों में सफल रहेंगे, प्रगति के चांस।

कर्क : रोजगार में उन्नति, विशेष समाचार मिलेगा, शत्रु पराजित, शुभ विचारों का उदय होगा, वाद-विवाद से बचना चाहिए, मित्र सहयोग मिलेगा, कामधन्धों से अच्छा लाभ, यात्रा में सुख।

सिंह : कारोबार से सामान्य लाभ, स्वजनों से सुख सहयोग, वैर-विरोध से परेशानी, व्यय बढ़ेगा, राजकीय कामों में दौड़-धूप, हालात कुछ सुधरेंगे, कामधन्धा ठीक चल पड़ेगा, परिवार की दशा अच्छी।

कन्या : काम रुक-रुक कर बनेंगे, लाभ एवं प्रगति के चांस मिलेंगे, घरेलू खर्च ज्यादा, शुभ अशुभ मिश्रित फल प्राप्त होंगे, आय में कमीं, मन परेशान, शुभ कार्यों में दिलचस्पी बनी रहेगी।
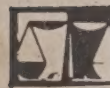
तुला : स्थाई कामधन्धों से लाभ होता रहेगा, आय में वृद्धि, यात्रा अचानक, परिश्रम सफल रहेगा, अशुभ फलों के साथ-साथ शुभ फल होंगे, उत्साह एवं कामधन्धा भी बढ़ेगा, नया काम न करें।

वृश्चिक : परिश्रम द्वारा सफलता एवं शुभ फलों का संचार होने लगेगा, काम भी बनते जाएंगे, कामधन्धा चलता रहेगा। सेहत नरम, भाग्य सहारा देगा, सफलता मिलती रहने से खुशी होगी।
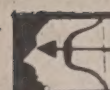
धनु : यात्रा न करें, जल्दबाजी, या गुस्से से काम न लें, काम देर से बनें, कारोबार से लाभ होता रहेगा, हालात कुछ सुधरेंगे, भाग्य सहारा देगा, और बिगड़े काम बन जाएंगे।

मकर : व्यापार में प्रगति, सुख साधनों पर व्यय होगा, यात्रा सफल, ऋण आदि की कुछ चिंता बनेगी, स्थायी कामधन्धों से लाभ होता रहेगा, आर्थिक दशा सुधरेगी, अशुभ फलों में कमी रहेगी।

कुम्भ : रोजगार की हालत ठीक, भाग्य साथ देगा, घरेलू कामों में व्यस्तता काफी बढ़ेगी, मेहनत सफल होगी, शुभकार्य पर खर्च, यात्रा की आशा है, अफसरों से मेल जोल, शत्रु पक्ष से बचें, लाभ होगा।

मीन : कोई विशेष सूचना मिलेगी, यात्रा का विचार बनाएंगे, कामधन्धों में प्रगति, शत्रु से बचें, परिश्रम एवं दौड़ धूप काफी रहेगी, काम बनते जाएंगे, कामधन्धों में प्रगति, शत्रु से बचें।

दीवाना अंक 21 काफी इन्तजार के बाद मिला। मुखपृष्ठ देखते ही हंसी छूट गई। सभी स्थाई स्तम्भ रोचक व मनोरंजक लगे। विशेष रूप से 'नर्कलोक में विद्रोह' और 'बुढ़ापे में शादी' हास्य कहानियां अच्छी लगीं। गरीब चन्द की डाक रोचक लगी। 'क्यों और कैसे' ज्ञानवर्धक लगा। 'एशियाई खेलों का दिल्ली वासियों पर प्रभाव' रिपोर्ट ने तो हंसा-हंसा कर पेट में बल डाल दिए। 'दीपावली विशेषांक' के इन्तजार में।

तजेन्द्र भाटिया, विजयनगर, दिल्ली-9

दीवाना का अंक 21 पढ़ने को मिला स्थाई स्तम्भों में पंचतंत्र, राजा जी, मदहोश और लल्लू ने बहुत हंसाया। वहीं नये स्तम्भों में एशियाई खेलों का दिल्ली वासियों पर प्रभाव और मोटी-मोटी भी हंसी भरे रहे। "बुढ़ापे में शादी" हास्य कथा वास्तव में हंसी से भरी थी।

—रामकिशन जुनूं, दिल्ली

दीवाना अंक 20 मिला। इसके सभी स्तम्भ रोचक थे। 'लक्ष्मी जी की प्रेस कांफ्रेंस' और एक अनोखा संगम बहुत अच्छी हास्य कथायें थी। फिल्म कहानी 'तेरी मांग सितारों से भर दूं' बहुत अच्छी लगी।

—अश्वनी चुघ 'आशु', फिरोजपुर

अंक नम्बर बीस पढ़कर बहुत प्रशन्नता हुई इसमें एक नया आइटम विज्ञापन कांग्रेस 82 पढ़कर हंसी का फव्वारा छूट गया और एक दो बार खेल-खेल में पढ़ा मो बहुत खुशी हुई और आशा करता हूं कि ऐसे ही और भी नए-नए प्रोग्राम देंगे जिससे हमारा हौसला बढ़े जैसे भारतीय क्रिकेट टीम का पाकिस्तान का दौरे का प्रोग्राम अगर आप खेल-खेल में देंगे तो बहुत ही बढ़िया रहेगा और आशा करता हूं कि यह आप जरूर देंगे।

—शिवकुमार तलवाड़ा, झील

दीवाना का अंक 20 बेहद इंतजार के बाद मिला। फीचर विज्ञापन कांग्रेस 82, जेब्रा कल्चर, रामलीला इटिस और गरीबचन्द की डाक सब रोचक व हास्यपूर्ण थे। मोटू-पतलू नहीं थे फिर भी उनकी कमी महसूस नहीं हुई, बाकी सभी रोचक सामग्री के लिए बधाई।

—अजिन्द्रसिंह चुघ, शाहदरा

दीवाना का अंक 20 मिला, इतना पसन्द आया कि शब्दों में बयान नहीं कर सकता। सिलबिल, पिलपिल, फैन्टम, पढ़कर काफी मनोरंजन हुआ। सभी कुछ रोचक था। गरीब चन्द की डाक में पूछे गए प्रश्न बेहद अच्छे लगे और उनका अन्तर भी ठीक लगा। 'क्यों और कैसे' पढ़कर नई चीजों का ज्ञान हुआ। इसमें छपा फिल्मी ड्रामा भी अच्छा लगा। कृपया इस बार 'निकाह' फिलम का ड्रामा प्रकाशित करें।

—सुखविन्दर जौड़ा, कृष्णा पार्क

दीवाना का अंक नं० 20 प्राप्त हुआ। आप ने अच्छा ही किया कि अंक नं. 19 और 20 एक ही साथ बना दिया। अब आप कृपया आगे से इसे अच्छी तरह से और जल्दी से जल्दी भेजें यही हमारी इच्छा है।

—जुगनू-विक्की, गोविन्द नगर

मुख्य पृष्ठ पर

बास्केट बाल है खेल निराला
गोलाकार है इसका जाला
खिलाड़ी डालें बाल इसी में
चिल्ली नहीं है कम किसी में
जाले पर कमोड लगाकर।
नहीं चूकता कभी निशाना
हैरान खड़े सब लोग देखकर
भेद चिल्ली का कोई न जाना॥

दीवाना

अंक : २३ वर्ष : १६ १-१४ दिसम्बर १९८२

सम्पादक : विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका : मंजुल गुप्ता
दीवाना तेज पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	२७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१४ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

व्यंग रचना

नॉन स्टॉप उड़ान !

शिवरंना

रिटायर होने से पहले अफसरी मिली तो हमारा तबादला भी जन्मभूमि का हुआ ! सहयोगी हमसे भी ज्यादा खुश थे। हमें पुरजोश पार्टी दी गई, और वे बस-स्टैण्ड तक हमें विदा करने आए। किसी ने कहा, 'वर्मा जी, यह मत सोचो, कि रिटायर होने के दो हफ्ते पहले अफसर बने हो। खुदा का शुक्र है कि उसने आपको ऊँचा तो आखिर उठाया ! खुदा के हर फैसले में, इंसानी भलाई होती है !

किसी ने कहा, 'वर्मा जी, हमारी दुआ है, कि आप जैसा सीधा, सच्चा आदमी और ऊंचा उठे ! हमने आभार प्रकट किया, और टा टा' किया।

हम गर्दन अकड़ाए, डीलक्स बस में सवार हुए, तो दुनिया की हर चीज चींटी सी लगने लगी अपने सामने ! बीबी बच्चों से मिलने की तड़फ बढ़ गई। अचानक, आखिरी सीट पर बैठे एक लंगोटी-धारी व्यक्ति ने, हमारे पास आकर कहा, 'पूरी बस में मुझे आप ही एक सुलझे हुए इन्सान लगते हैं ! क्या मेहरबानी करके, आप मेरी गंगाजल की यह थर्मस-फ्लास्क अपने पास रखेंगे थोड़ी देर ? उसके नेत्रों में गजब की चमक थी।

जरूर-जरूर ! बेखयाली में हम कह पड़े। थर्मस को हमने इकलौते बच्चे की तरह, सीने से लगा लिया। इससे पहले कि हम कुछ और सोचते लंगोटी-धारी 'भिखारी' ने, अपनी चमकीली पिस्तौल, युवा बस ड्राइवर की गर्दन पर रखकर कहा : 'बस पहाड़, की तरफ मोड़ो ! फौरन ! यह बस मैं 'हाईजैक कर रहा हूं ! किसी ने हिलने-डुलने का यत्न किया, तो उड़ा कर रख दूंगा !', वह साक्षात राक्षस लगने लगा था।

सवारियों की चीखें निकल गयीं। हमने मन में कहा : 'वाह नीली छतरी वाले ! पच्चीस सालों बाद, पन्द्रह दिन की अफसरी दी, और हमें नॉनस्टॉप, अपहृत बस में तूने उड़ा दिया ! इससे बेहतर यह था, कि हमें तू इस जहान ही से उठा लेता ! हमारी आँखें सजल हो गईं।

तभी लंगोटी-धारी अपहरण कर्त्ता ने अपनी काली टोपी हम सबके सामने फैलाकर कहा : 'यह बस अब चलती ही रहेगी ! पैट्रोल का भण्डार भी करना है ! जेबों में जो कुछ भी है वो टोपी में डालते जाओ ! मैं एक-एक की तलाशी लूंगा। किसी ने जेब में नया पैसा भी छुपाया, तो उसे यहीं गोली से उड़ा दूंगा। मैंने नये टायर और जरुरी खाद्य सामग्री भी खरीदनी है ! अगले स्टेशन पर, मेरे दो आदमी सामान खरीदेंगे !

दूसरी सवारियों की तरह हमने भी अपना सारा वेतन, यात्रा-भत्ता और महंगाई-भत्ता, अपहरण कर्त्ता को अर्पण कर दिया। बस का टिकट हमने हाथ में पकड़ लिया। फिर थर-थर कांपते हुए। अर्ज की : मेरे प्रभु आप मेरा यह सूट-बूट उतार कर खुद पहिन लें और अपनी लंगोटी हमें दे दें !

अपहरणकर्त्ता ने हमारी पीठ थपथपा-कर कहा : 'शाबाश ! काम के आदमी हो तुम। चलो, एक आदमी तो मेरा यहाँ हमदर्द निकला ! मुझे तुम्हारे सूट-बूट की जरूरत नहीं, बच्चा ! हम तो रमते योगी हैं ! तुम्हारी रियासत की मनचाही सैर करना चाहते हैं : इसलिए इस खुली-खुली, आरामदेह (डीलॅक्स) बस का अपहरण करने का 'पाप' कर रहे हैं ! कुल पन्द्रह दिनों का प्रोग्राम है, उसके बाद हम, इस बस को भी लुढ़का देंगे, औरस्वयं भी प्रायश्चित स्वरूप सुरपुरी चले जायेंगे !,

अपहरणकर्त्ता का घातक प्रोग्राम सुनकर हमारे तोते उड़ गए। स्त्रियां और बच्चे रोने लगे। सवारियों के रंग कागज की तरह सफेद हो गए। युवा ड्राइवर 'हनुमान चालीसा' सस्वर गाने लगा। अपहरणकर्त्ता बीड़ी पर बीड़ी पी रहा था। हमें अपना क्या, अपने बीबी बच्चों तक का भविष्य अंधकारमय नजर आया। अपहरणकर्त्ता हम पर काफी मेहरबान था। उसने दो-एक बार हमें बीड़ी तक पेश की ! हमसे बहुत-सी बातचीत कीं। हमें हंसाया।

'बस' सवा सौ किलोमीटर अपहरण कर्त्ता की आज्ञानुसार चली, तो एकाएक छठी ज्ञानेंद्री फड़की ! हमें भारी-भरकम थर्मस-बोतल का ख्याल आ गया। पिस्तौल झुकाकर, अपहरण कर्त्ता ज्योंही जम्हाई लेने लगा, हमने पलक झपकते, पूरी शक्ति से फ्लॉस्क उसके सिर पर दे मारी, एक धमाका हुआ ! अंधकार के साथ कई चीखें उठीं और हम बेहोश हो गए।

होश आया, तो हमें सदर अस्पताल में सहर्ष, फूलों के हारों से लादकर कहा 'आप धन्य हैं, वर्मा जी ! तेजाब वाली थर्मस फेंक कर, आपने अपहरणकर्त्ता को बस में ही फूंक डाला ! बस और सवा-रियों को बचाने पर, आपकी नौकरी दस साल और बढ़ा दी गयी है...!'

चॉकलेट लज़्ज़तदार! मधुर मज़ेदार!
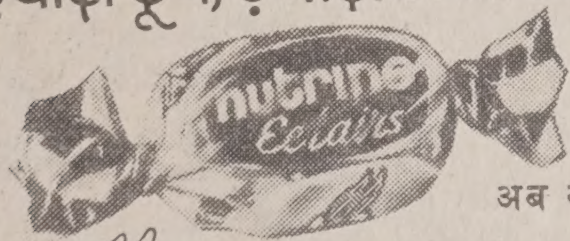
मोटू पतलू
चिराग़-ए-चीन

बहुत दिन बीत गये थे कि मोटू को पतलू, घसीटाराम और चेलाराम नहीं मिले थे लेकिन मोटू ने भी ठान लिया कि आज उनसे मिलकर ही रहेगा।
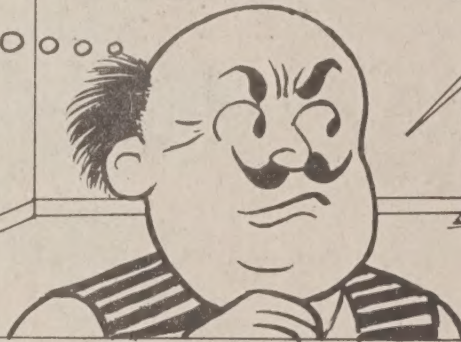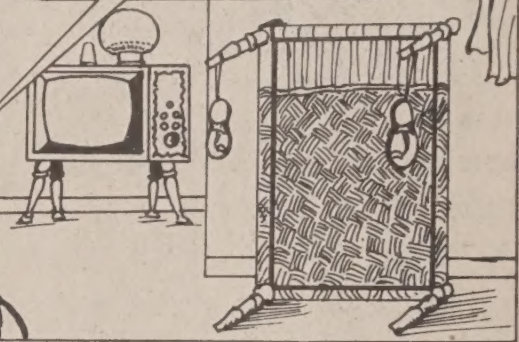
थोड़ा और ढूंढ़ने पर मोटू को अपने तीनों दोस्त पेड़ से उल्टे लटके हुये दिखाई देते हैं।

तोरी, करेले और कद्दू की औलाद कैसे अंगूर के गुच्छे की तरह लटक रहें हैं।

इब के समझ में आया तुम व्यायाम करके बड़ा आदमी बनना चाहते थे लेकिन मुझे छोड़ आये।

अबे गधे हम व्यायाम नहीं कर रहे। हम को तो डाकुओं ने मार-मार कर भुर्ता बना दिया है और उल्टा लटका दिया है और तुझे व्यायाम की पड़ी है। हमें खोल दे मोटू।

हमारे प्यारे मित्र तुम हमारे हाथ-पैर खोलोगे तो हम तुम्हारे आगे हाथ जोड़ेगें। जमीन पर खड़े होकर नाक-माथा रगड़ेगें। कसम तंदूरी मुर्गे की खोपड़ी को रगड़-रगड़ कर घियाकस कर देगें।
तू ठीक कहता है घसीटू जब तक मैं तुम्हें खोलूँगा नहीं तब तक तुम मेरे आगे हाथ-पैर कैसे जोड़ोगे। लो खोल देता हूँ।
पर खोलने से पहले ये तो बताओ मुझे छोड़कर इस घने जंगल में अपने-अपने पिताजी का सगन लेने आये थे।
सच बतायें भईया। हमें पता चला था इस जंगल में एक जादूगरनी है जिसके पास चिराग़-ए-चीन है। उसी का पता करने आये थे।
हूँ तो तुम तीनों चिराग़-ए-चीन लेकर दुनिया के सबसे बड़े आदमी बनना चाहते हो।
नहीं मोटू, हम चिराग़-ए-चीन लाकर तुम्हें पेश करना चाहते थे तुम्हें सरप्राईज देना चाहते थे ताकि तुम्हें हमारी दोस्ती तथा वफादारी का पता चल सके।

मैं कितना गधा हूँ! कितना उल्लू हूँ। तुम मेरे लिये चिराग़-ए-चीन ला रहे थे। और मैं महामूर्ख तुम्हारे बारे में क्या-क्या सोच रहा था बू हूहू--हूहू..........!
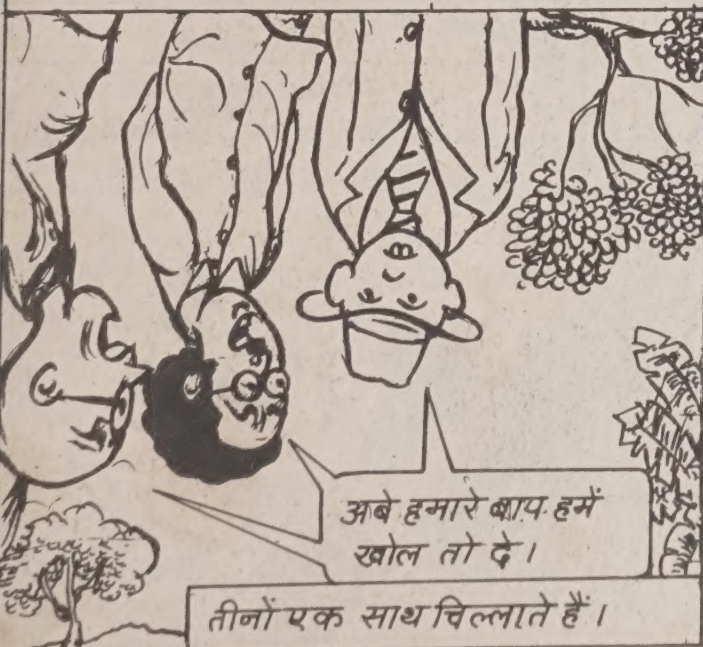
बस-बस, पश्चाताप हो गया। अबे हमें खोल दे मोटू ।

नहीं मैंने एक रात, सवा छः घण्टे, बत्तीस मिनट, पौने सेकेंड तक तुम्हारी नीयत पर शक किया। अब उतनी ही देर रो-रोकर पश्चाताप करूँगा ! मुझे मेरे कुकर्मों की सज़ा मिलनी ही चाहिये ।
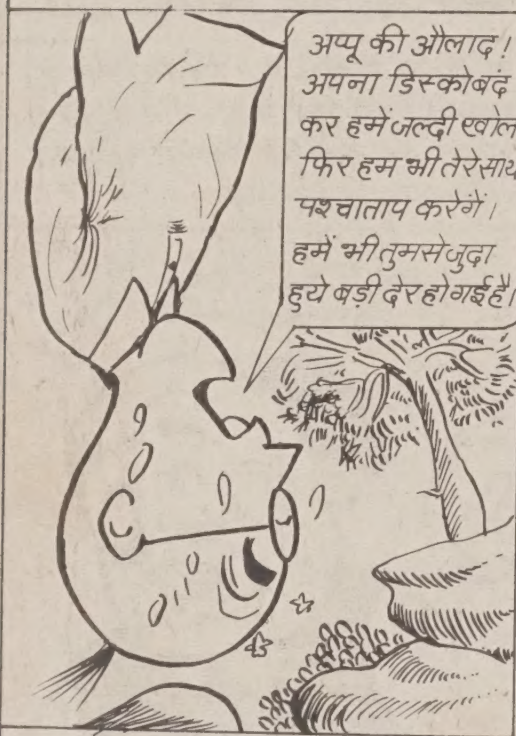
अप्पू की औलाद ! अपना डिस्को बंद कर हमें जल्दी खोल फिर हम भी तेरे साथ पश्चाताप करेंगें। हमें भी तुमसे जुदा हुये बड़ी देर हो गई है।

लो अब मैं तुम्हें खोलता हूँ ।

घनचक्कर एक बार खोल दे फिर देख मेरा पश्चाताप। तुझे तीनों लोकों की सैर करा दूंगा।
एक बार मुझे खोल दे मोटू। जूते मार-मार कर बकरे की दाड़ी जितने बाकी के बाल भी उधेड़ दूंगा।
मैं तेरा ऐसा झटका बनाऊँगा कि पश्चाताप ही करता रहेगा ।

मोटू तीनों को खोल देता है ।
तुम तीनों मेरा शुक्रिया अदा करो अब तुम मेरे आगे गिड़गिड़ाओ। हाथ-पैर जोड़ो, नाक रगड़ो ।

पेड़ से खुलने के बाद तीनों मोटू की घूँसों, जूतों से पिटाई करते हैं और उल्टा करके मोटू की खोपड़ी को जमीन पर रगड़ते हैं।
ढिशुंग
टक
हाँ मोटू, अब बता तेरी ये आलूबुखारे जैसी खोपड़ी घियाकस करें।
हाय! मर गया! मेरे बापो परमात्मा तुम्हें इक्कीस-इक्कीस हज़ार हरामी बेटे दे। मुझे छोड़ दो
तुमने तो कहा था खोपड़ी रगड़-रगड़कर घियाकस करोगे पर तुम ये क्या कर रहे हो?
हाँ, खोपड़ी कहा था, पर अपनी नहीं तेरी खोपड़ी का घियाकस करने को कहा था।
मुझे माफ कर दो और मेरे लिये चिराग-ए-चीन लेने चलो।
हाँ हमें टैम खराब नहीं करना चाहिये चलो अब चारों चलते हैं।
कहानी एवं चित्रांकन:- रघुबीर सिंह
चारों एक घने जंगल में पहुँचते हैं वहाँ सभी पेड़ जोर-जोर से हँस रहे होते हैं। यह राक्षसी जादूगरनी का जादू का जंगल होता है।
हा हा हा हा ssss।
ही ही ही ही sssss।
हो हो हो sss
एक ही समय में एक साथ चार-चार! हा हा हा हा ssss

यार मोटू, पतलू, घसीटू ये सब क्या हो रहा है। हम कहाँ फंस गये हैं?

एक दुसरे को अच्छी तरह देखलो। पतानहीं। इस के बाद हम ज़िन्दा रहें या ना रहें! हाय घसीटू! हाय पतलू!

तभी उनके सामने एक भयानक आकृति की औरत खड़ी होती है।
हा-हा-हा-हा SSSSSSS!
भूतनी!
चुड़ैल!
डायन!

मोटू तू गधा है। घसीटाराम तू कुत्ते की तरह भौं-भौं मत कर चेले तू तोते की तरह टें-टें करता रहेगा या चुप भी करेगा।

ये तो हेमा मालिनी, जीनत अमान रीना राय, मौसमी, रंजीता और रेखा से भी ज्यादा खूबसूरत है।
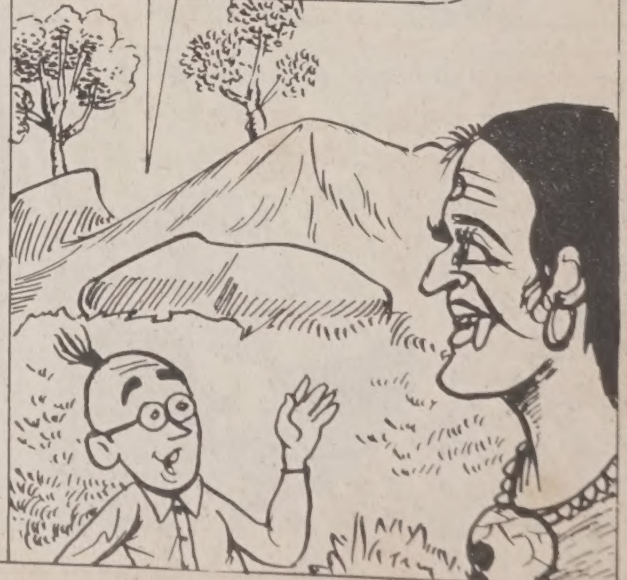
जादूगरनी ने क्या उपाय बताया? पतलू ने क्या तिगड़म लड़ाई? क्या मोटू, घसीटू और चेला अपने असली रूप में आये? क्या उनको चिराग-ए-चीन मिला? क्या वो दुनिया के सबसे बड़े इंसान बने? यह सब जानने के लिये अगले अंक में पढ़िये।

ताएक्वोन्डो

ब्रूसली के चेले से ताएक्वोन्डो सीखिए

दीवाने के पाठकों के लिये जीवन का सुनहरी मौका—ताएक्वोन्डो की प्राचीन लड़ने की कला को सीखिए। 3 डान पंट ब्लैक बैल्ट जिमि जगति यानि जिन्हें वास्तव में ब्रूसली ने शिक्षा दी थी। ताएक्वोन्डो में कराटे की फुर्ती और जूडो का बल मिश्रित है और सारे मार्शल आर्टस में सबसे अधिक प्रभावशाली समझा जाता है।

पाठ एक

सीखने वाले के लिए सफेद यूनीफार्म अनिवार्य है क्योंकि ये यूनिफार्म शरीर पर ढीली फिट होती है जिससे हाथ-पैरों को निर्विघ्न घुमाया फिराया जा सकता है, दूसरे सफेद रंग शुद्धता का प्रतीक है। इस में छः बैल्ट होनी हैं—सफेद, पीली, हरी, नीली, लाल और काली—हर बैल्ट से छात्र की सीखने की डिग्री का पता चलता है।

ताएक्वोन्डो कला सीखने या प्रैक्टिस करने के लिये किसी विशेष स्थान की आवश्यकता नहीं होती। इस कला को बहुत थोड़ा समय लगाकर सीखा जा सकता है। जब ताएक्वोन्डो की ट्रेनिंग लेने वाले ताएक्वोन्डो इन्स्टीट्यूट में दाखिल होते हैं तो सबसे पहले अपना ध्यान इंस्ट्रक्टर की ओर झुक कर उनका अभिवादन करते हैं। इन्सट्रक्टर भी अभिवादन का तुरन्त उत्तर देता है। इस प्रकार इन्सट्रक्टर तथा ट्रेनी दोनों ही अपना ध्यान ट्रेनिंग की ओर लगा कर एक दिमागी तैयारी करते हैं। क्लास समाप्त होने पर भी ट्रेनी और इंसट्रक्टर झुककर एक-दूसरे का अभिवादन करते हैं। ताएक्वोन्डो के आरम्भ और समाप्ती पर सभ्यता की अभिव्यक्ति।

शुरू करने वालों को सबसे पहले 'पंच' सीखना चाहिये जिसकी तकनीक स्टैप बाई स्टैप नीचे दी गई है

A जूमिग्रोक (मुट्ठी) Pic A

(1) सारी उंगलियों को फैला लो (Pic A 1)

(2) उंगलियों को बिल्कुल आगे के पोरे से भीतर को मोड़ना आरम्भ करो—अंगूठे को छोड़ कर। (Pic A 2)

(3) अब अंगूठे को मुड़ी हुई चारों उगलियों पर कस कर दबा लो, उन सबको जोर से दबाओ जब तक हथेली में बल न पड जायें (Pic A-3)

A

A 1.

A 2

A 3.
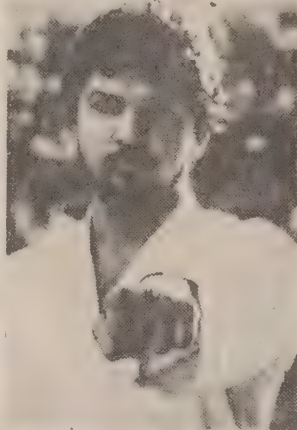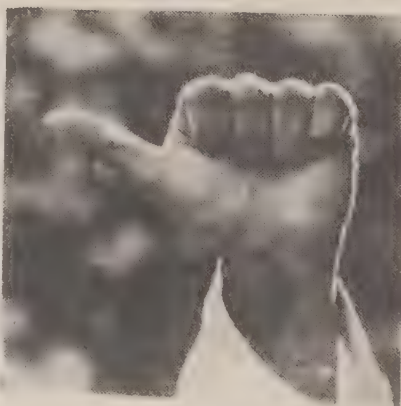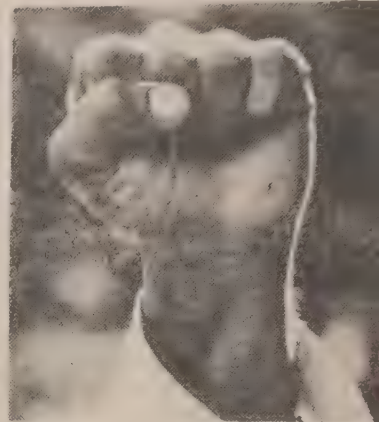
B चुंग बाई सिग्रोगी—

(तैयार हालत (Pic B)

1. अपने पैरों को साइडों पर फैलाओ
2. घुटने सीधे करो, अपने दोनों ह[ाथ] अपनी बैल्ट के सामने एक-दूसरे से कर[ीब] छः इंच के फासले पर रखो।
3. यह तैयारी 'गिबन सिग्रोगी' के लि[ए] प्रयोग में लायी जाती है जो तैयारी [की] आस्था होती है।

B.

C ब्छोम सिग्रोगी

(मुक्का मारने को तैयार) Pic C

C
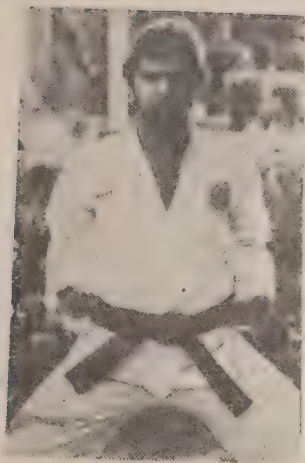
चुंग-बाई सिओगी अवस्था से आरम्भ कर (Pic B) पैरों के फैलाकर फिर अपने को थोड़ा नीचे झुकाओ, अपने घुटने थोड़े से मोड़ कर (C-1)

2. शरीर का भार दोनों पैरों पर बराबर सम्भला हुआ है (C-3)

अब तुमने मुक्का मारने की सही अवस्था सीख ली है। अपने दूसरे पाठ में तुम्हें मुक्का मारना सिखाऊंगा। परन्तु पहले तुम्हें अवस्था की बहुत अच्छी तरह प्रैक्टिस करनी होगी।

C-3.

C-1.

1		2	3		4
	■	5		■	
6	7		■	8	■
9			10		11
■		■	12		
13			■	14	
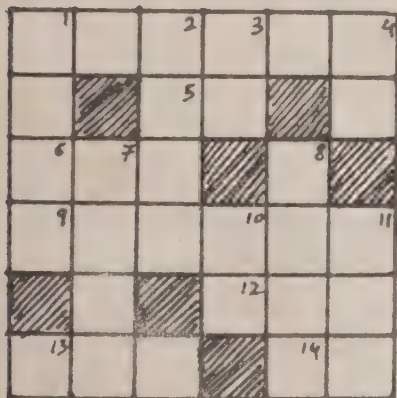
वर्ग पहेली १० रु. इनाम जीतिये

संकेत बायें से दायें

1. पहले टोटल करो। फिर पास आने के लिए कहो और बाद में दूर जाने का आदेश दो। कुछ हरकत होगी। (6)

5. पानी का राजा। (2)

6 जमींदार जो बीच में आधा फल डाल कर खाना पकाता है? (3)

9. एक सब्जी लेकर फेरे लगाना बेमकसद घूमना है। (6)

12. इससे भरे वातावरण में पसीने आते हैं।

13. इस देश से सम्बन्धित में तुम हो और एक मरने वाली रिश्तेदार। 3

14. तीन रीडों से क्रिकेटर पैदा करने का ठेका लो। (2)

ऊपर से नीचे

1. माथे पर लगाने लायक अभिनेत्री जो अब नहीं रही। (4)

2. साबुन कर में लीजिए व उसमें से दस्तकार पाइये। (2)

3. नाम के पीछे दौड़ने वाला रंग (2)

4. बहुत भारी आवाज। (2)

7. पैरों को जमीन पर पड़ने देना (4)

8. इसमें दोस्ती नहीं है क्योंकि यहां अधूरी मुश्किल भी भारी है। (4)

10. सीधा बहुत है इस जैसा। (2)

11. फिल्मी कसम की गिनती। (3)

अन्तिम तिथि — २५-१२-८२.

नाम ——————————————————

पता ——————————————————

लेडीज टेलर

दीपक श्रीवास्तव

कभी-कभी ऐसी अनहोनीं घट जाती है कि सहसा जिस पर यकीन नहीं होता है। लेकिन आप यह यकीन करें यह सच है। बात है रामलाल जी की, जिनको हर कदम पर दुर्भाग्य ने ही पकड़ा है। बनाने वाले ने इनका कद तो जरूर अमिताभ बच्चन का दिया है बिलकुल खजूर से लम्बे, पर किस्मत वैसी नहीं। जनाब एम० ए० पास हैं पर क [illegible] ह्या हैं, दिल्ली में लेडीज-टेलर की [illegible] है। लेडीज-टेलर कैसे बनें इस [illegible] भी किस्सा है। कालिज लाईफ से ही [illegible] आशिक मिजाज थे, पर किसी हसीना ने दिल नहीं दिया। बड़ी-बड़ी फिल्मों से फार्मूले चुराये पर भाग्य ने कभी साथ नहीं दिया हर जगह शिकस्त ही शिकस्त, कभी-कभी पिटाई भी हुई। बड़े मायूस हो गए कि किसी हसीना से प्यार का गुल खिला कर दुनियां में चर्चायें आम न बन सके। एम. ए. पास कर चुके तो किसी मनचले दोस्त ने मशवरा दिया कि मियां हिम्मत मत हारो।कहते हैं हारिये न हिम्मत, बिसारिये न राम', किसी का दिल न जीत सके तो क्या किसी को करीब लाकर उसे छूने का नुस्खा बता दूं। सो उसने बता दिया कि 'लेडीज-टेलर' बन जाओ। नाप लेने के लिए कहीं से भी इंची टेप घुमा दो, जिस तरह चाहो नाप ले लो। ऐसे तो कोई छूने भी नहीं देगा पर इस धन्धे में सब छूट है। और यदि किस्मत साथ दे जाये तो किसी को अपना भी बना लो।

बात तो पते की थी। रामलाल जी की समझ में आ गई, बस खुल गई दिल्ली में दुकान,बड़ा सा बोर्ड 'रामलाल लेडीज टेलर' भले ही इस दुकान को खोलने में उनका एक छोटा सा घर बिक गया तो क्या हुआ,दुकान ही में सो लेंगे। सारा रुपया तो दुकान की पगड़ी में निकल गया। दुकान तो खुल गई और कारीगर भी मिल गया, नाम भी उसका था 'मून्ना लाल', बम्बई मे काम की तलाश में दिल्ली आया था। 'मुन्ना लाल' ने रामलाल को नाम लेना तो सिखा ही दिया, बाकी कपडे मिलना-काटना रामलाल एम. ए. के बस की नहीं थी। सो 'मुन्नालाल' सिलाई-कटाई कर दिया करता था। कुछ सितारे बुलन्दी पर थे, भगवान मेहरबान थे वह दुकान चल निकली। ऐसी चली कि भीड़ लगी रहती। रामलाल जी की किस्मत ही खुल गई क्योंकि पास ही कुछ दूर पर लड़कियों का छात्रावास था, सो कोई दुबली, कोई मोटी, कोई छोटी सभी छात्राएं आने लगीं दुकान पर। रामलाल कभी किसी की कमर नापते, कभी कन्धों की लम्बाई कभी कन्धों से नीचे चौड़ाई से नाप, कभी चुस्त जींस पैन्ट के लिए हिप्स का नाप, पैरों की कमर से लम्बाई। वैसे तो दर्जीगिरी का अपना पेशा होता है पर रामलाल जी पेशे के लिए नहीं, अपनी आंखों की सिकाई के शौक में लेडीज-टेलर बने थे। बस रामलाल जी के सपने पूरे होने लगे।

'रामलाल जी' नाप लेते और 'मुन्ना लाल' जी कटाई-सिलाई-फिटिंग। 'मुन्ना लाल क्या मिले रामलाल की दुकान पर लड़कियों की क्यू लगने लगी। आखिर 'मुन्नालाल' भी बम्बई से आया हुआ दर्जी था। ऐसी बेहतरीन फिटिंग होती कि पूरे दिल्ली में रामलाल टेलर ही मशहूर हो गये। कुछ आस-पास छोटे मोटे टेलरों की दुकान ही चौपट हो गई। वे बड़ी-बड़ी बद्दुआएं देते रामलाल और मुन्नालाल की जोड़ी को।

'मुन्नालाल' क्या मिले, रामलाल की हर एक मनोकामना पूरी होने लगीं, होती भी कैसे न, बम्बई से जो मुन्नालाल की बड़ी दीदी 'रानी' आ गई थी। रानी दीदी ने दुकान पर कदम क्या रखा कि आते ही रामलाल जी से आंख लड़ गई। बस फिर क्या था प्यार का सिलसिला चला तो ऐसे चला कि रामलाल जी उसके इशारे पर ही चलने लगे। ये सिलसिला भी चला तो एक 'ब्लाउज' की सिलाई से। रामलाल जी ने भी 'इंच टेप' को नाप के लिए गोलाई से घुमाया, नाप लेते लेते दोनों पास आ गये कि सांस-सांस टकरा गई बस प्यार हो गया। रामलाल जी खुश थे कि किस्मत हर वक्त दगा नहीं करती कभी 'वफा' भी करती है। पर भाग्य में आगे क्या लिखा है किसी को नहीं मालूम होता है।

एक दिन दिल्ली की मशहूर 'लेडीज-टेलर' की दुकान पर कुछ हिजड़े भी आ धमके। 'बैल-बाटम' 'जीन्स' सिलाने और कोई ब्लाउज सिलवाने। रामलाल जी भला कब इनके कपड़े सिलने वाले थे, पर बिचारे क्या करते जब इनकी प्रेयसी 'रानी' ने यह कह कर मुन्नालाल को नाप लेने भेज दिया कि 'हिजड़े हैं तो क्या हुआ, हैं तो इन्सान ही, मैं इन्सान इन्सान में भेद नहीं होने दूंगी।' रानी दीदी का इशारा था कि मुन्नालाल फटाफट नाप लेने लग गए। मास्टर रामलाल मन ही मन में बड़े लाल पीले हुए पर उनकी इतनी हिम्मत कहां थी कि अपनी प्रेयसी 'रानी' की बात काट सकते। किस्मत से एक ही जगह सफलता मिली थी '[illegible]क में,' उसे भी नाराज करते तो कैसे

पर दुर्भाग्य यहीं [illegible] नहीं हुआ। दिल्ली में हिजड़ों [illegible] ओवर इण्डिया कान्फ्रेंस हो रही [illegible] रोज ही हिजड़े नाचते-गाते ब[illegible] चले आते कपड़े सिलाने। कुछ हिजड़ों के कपड़े सिल देने के बाद अब रामलाल जी किसी हिजड़े को न भी करते तो कैसे।

तो जनाब जब हिजड़े कपड़े सिलाने आने लगे तो किसी छात्रा ने उधर आना भी तो क्या गुजरना भी बन्द कर दिया। इधर हिजड़े भी ऐसे ढीट थे कि हटते ही नहीं थे, और पैसे देने के मामले पर कह देते 'हाय राजा ले लेना कोई हम भागे थोड़े ही जा रहे हैं' अब तो इनके उधार खाते में कपड़े भी सिलने लगे। कुछ दिनों बाद रामलाल लेडीज टेलर से 'हिजड़ा-टेलर' के नाम से मशहूर हो गए

अब इसको क्या कहिए कि एक पड़ोसी टेलर ने रामलाल की दुकान पर रात में चुपचाप नया बोर्ड लगा दिया जिस पर लिखा था 'रामलाल हिजड़ा टेलर'। यही नहीं एक लोकल अखबार में इस बोर्ड की फोटो के साथ खबर भी छप गई। अब तो हर जबान पर रामलाल हिजड़ा टेलर का नाम था।

रामलाल जी अब खून का घूंट पी के रह गए। दुर्भाग्य ने फिर भी साथ न छोड़ा एक दिन 'मुन्नालाल अपनी रानी दीदी' के साथ बम्बई जाने के लिए अलविदा कहने आये। रामलाल जी जिन्होंने अपनी दुकान को लेडीज-टेलर से हिजड़ा-टेलर बना लिया था, वो अपनी प्रियतमा को कैसे जाने देते। उनकी इस दयनिय स्थिति को देखकर 'रानी' से रहा नहीं गया।उसने सच्चाई जो बताई कि 'रामलाल' के होश उड़ गए। उसने ब्लाउज में हाथ डालकर दो रबर-पैड रामलाल जी के आगे रख दिए। रामलाल जी तब समझे कि जिसे वो दिल की रानी समझ रहे थे वह एक हिजड़ी थी। मुन्नालाल से भी सच्चाई न छुपी वो बोला मैं भी वही नम्बर-3 हूं। मुन्नालाल ने अपनी रामकहानी बताई कि वह बम्बई में हिजड़ा था पर उसे नाचना-गाना पसन्द न था। इसलिए उसने पान की दुकान खोली सो हिजड़ा बिरादरी ने उसे अपने से अलग न होने दिया। हार कर वह बम्बई से भाग कर अहमदाबाद पहुंच गया। वहां उसने अपनी हकीकत छुपाकर एक उस्ताद से दर्जीगिरी सीखी पर दुर्भाग्य से वहां हिजड़ों की कान्फ्रेंस हुई जिसमें बम्बई से आये एक हिजड़े ने उसे पहचान लिया। अब वहां से भागकर मुन्नालाल दिल्ली आये और रामलाल को मिल गए। दुर्भाग्य से हिजड़ों की 'आल इण्डिया कान्फ्रेंस दिल्ली में हो गई। उसमें से एक हिजड़ी 'रानी' ने उसे पहचान लिया। वह पता करते हुए 'रामलाल की दुकान' तक पहुंच गई। चूंकि वह बम्बई की महशूर हिजड़ी थी, क्योंकि शक्लसूरत से वह हिजड़ी नहीं बल्कि लड़की सी ही लगती थी अतः मुन्नालाल ने राज छुपाने के लिए उसे दीदी बता दिया। अगले दिन मुन्नालाल की हिजड़ों के गुरु के यहां पेशी हुई। उन्हें हिजड़ों के गुरु द्वारा अपनी बिरादरी के 'पेशे' में लौटने का हुक्म मिला।

इधर कान्फ्रेंस के लिए कुछ हिजड़ों को नये कपड़ों की जरूरत थी वैसे तो कोई अच्छा दर्जी मिलता नहीं उनके कपड़े। सो रानी हिजड़े ने एक योजना बनाई और रामलाल जी उस जाल में फंसते ही चले गए।

'मुन्नालाल' और 'रानी' तो चले गए बम्बई, पर लगा गए चूना रामलाल जी को। फिर उनकी दुकान पर कभी कोई ग्राहक नहीं आया। आखिर आता भी कौन 'हिजड़ा-टेलर' की दुकान पर। उसमें रामलाल जी को दुकान ही बन्द करनी पड़ गई।

यह भी सच है

सिक्के

उठे हुए किनारों के या यन्त्र निर्मित सिक्कों का बनना पन्द्रहवीं शताब्दी से ही आरम्भ हुआ है। इसकी शुरुआत सिक्के के दोनों ओर बने नमूनों की रक्षा करने के हेतु हुई थी, किनारों के थोड़ा ऊंचा हो जाने से सिक्के पर बना डिजाइन थोड़ा भीतर रह जाता है जिससे वह शीघ्र ही घिसता नहीं। साथ ही इससे सिक्कों की ढेरी भी आराम से लगाई जा सकती है।

सिक्के में कोई भी अनोखापन, जैसे उठे किनारे, उसकी नकल करने में कठिनाई उत्पन्न करते हैं, जिससे कोई भी आसानी से नकली सिक्के नहीं बना सकता। केवल राष्ट्रीय सिक्के ढालने के कारखाने में ही ऐसी मशीन होती हैं जो बिल्कुल सही किनारे बने सिक्कों का निर्माण कर सकती हैं।

शाओलिन मन्दिर—

शाओलिन मन्दिर संसार में मार्शल आर्टस के लिए प्रसिद्ध है। इसे आकाश के नीचे पहले नम्बर का मठ माना जाता है, क्योंकि यहीं चीन के परम्परागत मार्शल आर्टस का विकास और बढ़ोत्तरी हुई। यहाँ के अच्छे समय में लगभग एक हजार भिक्षु सैनिक शाओलिन मन्दिर में थे। मार्शल आर्ट के प्रसिद्ध जानकारों को यहाँ रहने के लिए आमन्त्रित किया जाता था इनके मन्दिर में ठहरने की अवधि तीन वर्ष होती थी और यह लोग अपने-अपने आर्ट और दक्षता को शाओलिन के बोक्सिंग गाइड में मिला देते थे जिसमें एक हजार से भी अधिक युद्ध के तरीके, हथियारों से, खाली हाथों से, घोड़े पर और पैदल चल कर करने के पहले से ही मौजूद थे।

विश्वास किया जाता है कि मार्शल आर्ट्स का आरम्भ भारत में हुआ था बाद में इसका प्रचार चीन में एक बौद्ध भिक्षु द्वारा किया गया था। होनान राज्य के एक मठ का नाम शाओलिन है। यहीं बुद्धि धर्मा नाम के एक बौद्ध भिक्षु ने पहले 18 व्यायामों का विकास किया था। इन व्यायामों मे शरीर के बाहरी ढांचे को मजबूत किया जा सकता था, यह कार्य छठी शताब्दी ए. डी. में किया गया था। भिक्षुओं द्वारा इनका विकाम होता रहा और वे इनमें दक्ष हुए।जिन्होंने मार्शल आर्टस की शिक्षा बौद्ध धर्म मानने वालों को भी दी।

हाथों की ताकत—कुंग फू मार्शल आर्ट में हाथों का विशेष प्रकार से अनुकूलन किया जाता है। रेत से भर कर दो प्यालों को आग पर गरम किया जाता है और हाथों को बार-बार उस जलती रेत में घुसाया जाता है। जैसे-जैसे ट्रेनिंग आगे बढ़ती है मोटी और अधिक मोटी रेत का प्रयोग किया जाता है, जब तक कि आखिरी स्टेज में, प्यालों में रेत का स्थान कंकर पत्थर ले लेते हैं। वैसे एक और तरीका भी है जिसे 'टैंग' तरीका कहा जाता है यह एक सुगम तरीका है और इसमें हाथ की मांस पेशियाँ और लिगेमैंटों को बाहरी त्वचा के रूप पर असर के बिना ही सख्त बना दिया जाता है। हो सकता है इस तरीके से भी त्वचा पर कुछ प्रभाव पड़े, पर यह इतना कम होता है कि ध्यान से देखे बिना उसका पता नहीं चल पाता।

फालतू जगहों के दीवाने उपयोग

हमारे पास कई ऐसी वस्तुयें होती हैं जिनमें खाली स्थान होते हैं जिनका कोई उपयोग नहीं किया जाता। थोड़ी-सी सूझ-बूझ से इन जगहों से कई तरह के काम लिए जा सकते हैं। हमारे कुछ दीवाने सुझाव पढ़कर देखिये—

मिलिट्री जनरलों के कंधों पर पफ होता है उसे पाउडर पफ के डिब्बे के रूप में काम में लाया जा सकता है। अगर जनरल पाइप पीता है तो टोबेको पाऊच के रूप में भी प्रयोग में लाया जा सकता है।

बैल्ट के बक्कल में शीशा लगा हो तो गर्ल फ्रेंड के मेकअप करने के काम आ सकता है।
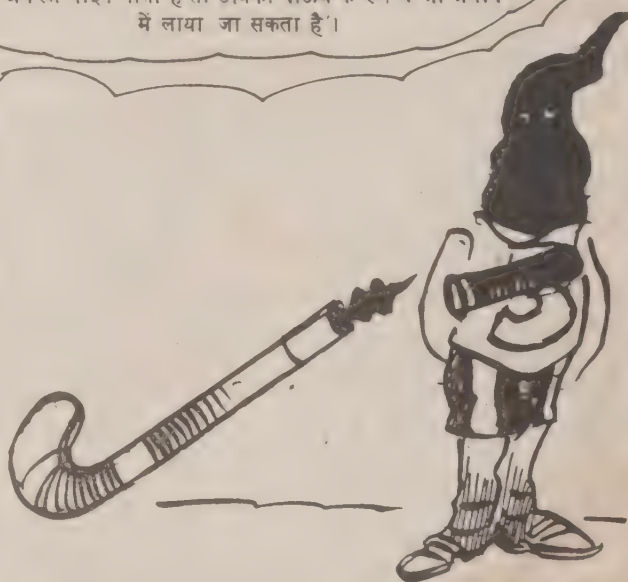
हाकी स्टिक के मूठ वाला भाग खोखला हो जिसमें काली नकाब रखी हो। जब हमारी हाकी टीम हार जाये तो स्टिक खोल नकाब निकाल कर पहन लिया ताकि लोगों को पता न लगे यह कौन-सा खिलाड़ी है।

फैंसी छातों की मूठों में तह किये रुमालों या नैपकिनों को रखने लायक जगह बनाई जा सकती है। पसीना आया तो रुमाल निकाल कर पोंछ लिया।

बन्दूकों के कुन्दे ठोस लकड़ी के होते हैं। आसानी से इसमें सिगरेट केस फिट किया जा सकता है।

लम्बी तुर्की टोपी या पार्सी टोपी अन्दर से खोखली होती है। इसमें फाइबर ग्लास का हल्का टिफन कैरियर फिट किया जा सकता है।
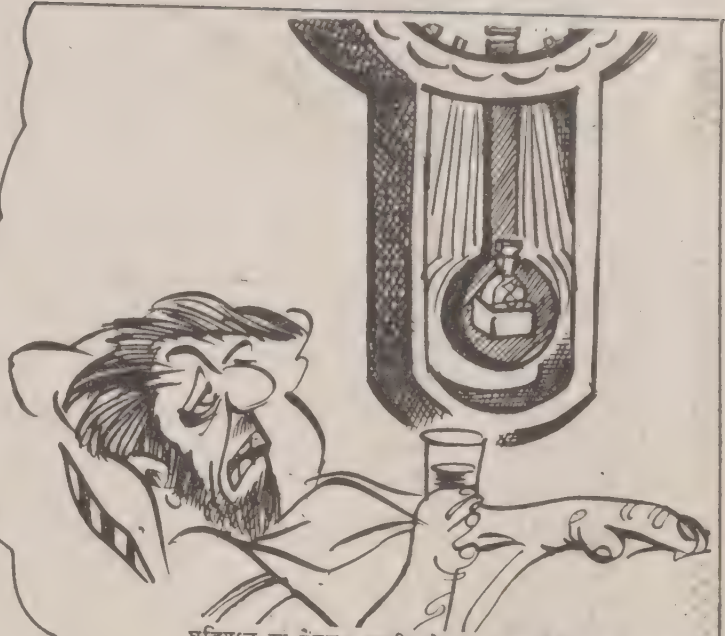
घड़ियाल का पेंडुलम खाली डोलता रहता है। पेंडुलम में एक केस सा जुड़ा हो तो उसमें दवा की शीशी रखी जा सकती है। वह दवा जिस पर लिखा हो कि दवा लेने से पहले अच्छी तरह हिला लें।

सैंडल की ऊंची एड़ी में घर के दरवाजे की चाबी ठूसने लायक छेद बनाया जा सकता है। फैशन का फैशन और चाबी भी सुरक्षित।

मिलिट्री वालों की टोपी के ऊपर वाले उभरे भाग में पान रखने के लिए पफ कम्पार्टमैंट बन सकता है।

गुन्डों के लट्ठ में एक छोटा-सा कैलकुलेटर फिट हो सकता है। लूटने के बाद वह कैलकुलेट करके देख सकता है कि कितना माल हाथ लगा।

बेलन दोहरे खोल वाली हो तो अन्दर घडी के लिए खाली जगह निकल आएगी। रात को पति की प्रतीक्षा करते-करते बेलन खोल कर टायम भी नोट किया जा सकेगा।

प्र० : समुद्र की सतह का नक्शा सबसे पहले कब बना था ?

उ० : समुद्र की तरह के वास्तविक रूप का पता सन् 1920 तक नहीं लग पाया था। पिछली शताब्दी के अन्त तक समुद्र की सतह् के नक्शे नाविकों के वर्णन के आधार पर निर्धारित किये जाते थे कि कहां चट्टानें हैं और कहां गहरा पानी है।

हाल के वैज्ञानिक विकासों तथा नये यन्त्रों और तकनीकों की सहायता से नक्शे अधिक सही और बारीकी से बनाये जाने लगे हैं। जहाजों से समुद्र के तले को तरंगे प्रसारित कर, तले की गहराई का पता लगा लिया जाता है और इसी से तले में हुए बदलावों का भी अनुमान हो जाता है।

मशीनी, ध्वनिक और इलैक्ट्रोनिक औजारों ने समुद्र के तले के ऐसे चित्र बनाये हैं जिनमें समुद्र का तला एक बड़ा मैदान होने के बजाये पहाड़ी श्रृंखलाओं, घाटियों, पहाड़ी चोटियों और खड्डों से भरा मिला है। कुछ पहाड़ तो पृथ्वी पर पाये जाने वाले पहाड़ों से भी अधिक ऊंचे हैं, साथ ही सतह के सबसे गहरे भाग इतने गहरे हैं कि पृथ्वी पर कोई भी पहाड़ समुद्र की सतह् से इतना ऊंचा नहीं है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि समुद्र के भीतर भी पृथ्वी के उपर के समान ही पहाड़, घाटी और खड्ड सब ही मौजूद हैं।

प्र० : क्या मनुष्य कभी मौसम पर काबू पा सकेगा ?

उ० : सन् 1940 से वैज्ञानिकों ने ऐसे तकनीकी विकास किए हैं जिनकी सहायता से कुछ मौसम के बदलावों का नियन्त्रण किया जा सकता है। उदाहरण के लिए बिजली को आकाश में चमकने से रोका जा सकता है, इसके लिए इलैक्ट्रिकल अर्थ के प्रयोग से बादल के भीतर के इलैक्ट्रिकल करंट को डिफ्यूज किया जाता है। अमरीका के वैज्ञानिक श्री वी. जे. शेफर के अनुसार बादलों में साधारण अवस्था में पाई जाने वाली बर्फ से अधिक बर्फ एकत्रित की जा सकती है।

मौसम विशेषज्ञ अभी से इन खोजों का लाभ उठा रहे हैं और पहाड़ों पर इनकी सहायता से सर्दी के खेलों का आनन्द लेने के लिए अधिक हिमपात कर रहे हैं, साथ ही विनाशकारी ओलों को गिरने से रोक रहे हैं, और भयंकर तूफानों को हल्का कर रहे हैं या बिल्कुल ही रोक रहे हैं।

कुछ स्थानों पर तो वैज्ञानिक सूखी हुई भूमि पर बादलों को बरसाने में भी सफल हो गये हैं। यह स्थानीय प्रयोग हो सकता है आगे चल मौसम पर नियन्त्रण करने में भारी योगदान दें।

परन्तु उससे पहले वैज्ञानिकों को वायु दूषण के मौसम पर बुरे प्रभावों से निपटने के तरीके ढूंढ़ निकालने होंगे।

प्र : चिमगादड़ उड़ते हुए तेज़ आवाजें क्यों निकालते हैं ?

उ० : चिमगादड़ तेज़ आवाजों से अपनी राह मालूम करते हैं। ये रात्रि के जीव हैं अर्थात चिमगादड़ रात को ही इधर-उधर उड़ते हैं इस कारण इन्होंने अपनी सुनने की शक्ति का विकास इस कदर कर लिया है कि यह अपनी राह एक इकोलोकेशन तरीके से ढूंढ़ते हैं।

चिमगादड़ की अंधेपन में भी उड़ने की शक्ति का अध्ययन सब से पहले सन् १७२९-१७९९ तक में लाजारो स्पालानजानी ने किया था। यह प्रमाणित करने को कि चिमगादड़ को अपना रास्ता देखने की आवश्यकता नहीं है इन्होंने कुछ चिमगादड़ों की आंखें आपरेशन कर निकलवा दी थीं, फिर भी यह चिमगादड़ अपने निर्दिष्ट स्थान पर सरलता से पहुंच गये थे।

२० वीं शताब्दी में बायोलोजिस्टों ने ऐलेक्ट्रोनिक यंत्रों की सहायता से चिमगादड़ों के साथ परीक्षण किये हैं, उन लोगों को पता चला है कि चिमगादड़ अपने जोन के स्थान का अनुमान, तेज आवाज निकाल कर उनकी प्रतिध्वनि जो चीजों से टकरा कर वापिस आती है सुन कर कर लेते हैं। इनकी अधिकतर आवाजें इतनी अधिक फ्रीक्वन्सी की होती है कि मनुष्य के कान से सुनाई नहीं दे पाती।

चिमगादड़ आमतौर से झुंडों में उड़ते हैं परन्तु जाहिर है वे एक दूसरे द्वारा निकाली गई आवाज की प्रतिध्वनि से गड़बड़ाते नहीं। जंगलों में शिकार करते समय चिमगादड़ छोटे कीड़े मकोड़ों से हुई प्रतिध्वनि को पृथ्वी, पेड़ पत्तों या पेड़ के तने और वर्षा की बूंदों की प्रतिध्वनि से अच्छी तरह अलग पहिचान लेते हैं। यह छोटे स्तनपायी जीव हमारे आधुनिक युग की खोज सोनार यंत्र को लाखों वर्ष से प्रयोग करते आ रहे हैं।

प्र० : पक्षियों के अण्डे किस रूप के होते हैं, क्यों होते हैं ?

उ० : अण्डे की गोलाई पर बाहर से दबाव डाला जा सकता है परन्तु इसी अन्डेपर यह दबाव भीतर से पड़े तो अंडा टूट जाता है इस प्रकार एक असहाय चूजा अपने अन्डे में तब तक महफूज रहता है जब तक कि वह उसके खोल से बाहर आने योग्य नहीं हो जाता। और बाहर आने का कार्य वह थोड़े से थोड़े दबाव से कर लेता है।

अन्डे सेने के लिये पक्षी को उनके ऊपर बैठना पड़ता है, इन गोल अन्डों को रखने के लिये सबसे उपयुक्त होता है पक्षी का कपनुमा घोंसला जो इन्हें लुढ़कने से बचाता है, इसलिये अन्डे की सबसे बढ़िया शक्ल होती है एक ओर से गोल दूसरी ओर से कुछ छोटा गोल—इस प्रकार यह अन्डे घोंसले में छोटा सिरा नीचे कर आसानी से फिट हो जाते हैं जिससे जगह भी कम घिरती है और ऊपर बैठने वाले पक्षी को भी सब अन्डों को एक साथ ढक लेने में दिक्कत नहीं होती।

थोड़े तिनकों के घोंसले बनाने वाले पक्षियों जैसे समुद्री, के अंडे और भी अधिक लम्बोतरे होते हैं। यदि ऐसे अंडे किसी पहाड़ी या चट्टान के खोखलें में तेज़ हवा से प्रभावित भी होते हैं तो नीचे गिरने के बजाये गोल-गोल घूम जाते हैं। और इस प्रकार प्रकृति इन अंडों की स्वयं ही रक्षा करती है।
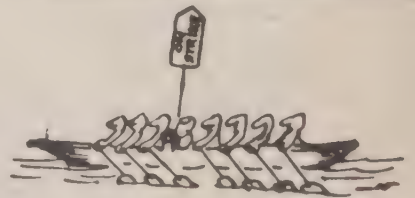
क्यों और कैसे ?
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

गाय ने ज्यादा दूध दिया

हाल में ही एक समाचार छपा था कि महाराष्ट्र में किये गए परीक्षणों से पता लगा कि गायें दूसरे संगीत की अपेक्षा डिस्को म्यूजिक सुनने पर ज्यादा दूध देती हैं। क्या डिस्को म्यूजिक का प्रभाव गायों तक ही सीमित है? नहीं। दूसरे जानवरों पर और विशेष स्थितियों में मनुष्यों पर भी इसका गहरा प्रभाव हो सकता है जो परीक्षण करने पर सिद्ध किया जा सकता है। दूसरे प्राणी भी डिस्को संगीत के प्रभाव में ज्यादा कारनामे कर सकते हैं। जैसे—

घोड़ों या गधों को डिस्को म्यूजिक सुनाया जाए तो वह दुलत्ती ज्यादा जोर की मारेंगे। जिसको दुलत्ती लगेगी उसे दिन में ही रिंगो स्टार नजर आयेगा।

प्रेमी एक दूसरे पर ज्यादा आसक्त होंगे, आसपास डिस्को म्यूजिक बज रहा हो तो, क्योंकि डिस्को की धकाधक की बीट को वह एक दूसरे के दिल की धड़कन समझ बैठेंगे।

डिस्को म्यूजिक सुनाने पर कुत्ता ज्यादा जोर से काट खायेगा और चौदह की बजाय सोलह इंजेक्शन लगाने पड़ेंगे दो फालतू इंजेक्शन नाजिया हसन के नाम पर

मुर्गे को डिस्को म्यूजिक सुनाया जाय तो वह बांग देते समय गर्दन को लम्बी कर गर्दन के पर नहीं फुलायेगा। कमर को दो तीन लचके दे देगा और मुह फाड़कर कुकड़ुकू बांग देगा।

मुर्गी को डिस्को म्यूजिक सुनाने पर एक बार में वह कई अंडे देगी। ठु-ठां के वाल्यूम के अनुसार अंडे का साइज अलग अलग होगा।

भेंस को डिस्को म्यूजिक सुनाने पर वह तालाब में ही ज्यादा कीचड़ मे लथपथ होकर निकलेगी। क्योंकि कीचड़ में बैठ वह शरीर हिलायेगी और ज्यादा नीचे धंसेगी

मिर्ची या मसाला कूटते समय डिस्को म्यूजिक लगाया जाये तो कुटा हुआ माल बहुत बढ़िया महीन होगा, मूसल चलाने और डिस्को की बीट में अजीब तालमेल है। हां चावल कूटते समय लगाया जाय तो चावलों का चूरमा ही बन जायेगा।

पागल हाथी को डिस्को म्यूजिक सुनाया जाय तो ज्यादा मोटे पेड़ उखाड़ फेंकेगा। एक तो पागल ऊपर से डिस्को म्यूजिक, बलती पर तेल डाल दिया।

पिल्लों को डिस्को म्यूजिक सुनाने पर वह ज्यादा मोटी हड्डियां चबा सकेंगे। जूतों और चप्पलों का ज्यादा भट्टा बिठा सकेंगे

कठफोड़वों को डिस्को म्यूजिक सुनाया जाय तो वह ज्यादा जल्दी-जल्दी पेड की छाल में छेद बना सकेंगे। डिस्को की टक टक टक की बीट पर सिलाई मशीन की तरह चोंच चलायेंगे।

सुअरों को डिस्को म्यूजिक सुनाने पर वह मोटे होकर कुप्पा बन जायेंगे। मरने पर उनकी खाल ज्यों की त्यों फुटबाल वालीबाल या रगबी बाल का काम देगी। बस ब्लेडर ठूस कर हवा भर दो।

डिस्को म्यूजिक सुनाने पर मच्छर ज्यादा पींऽऽऽ पींऽऽऽ नही करेंगे। एक जोरदार पी और काट कर चले जायेंगे। देर तक पींऽऽऽ पींऽऽऽ करना तो शास्त्रीय संगीत के तर्ज पर चलता है।
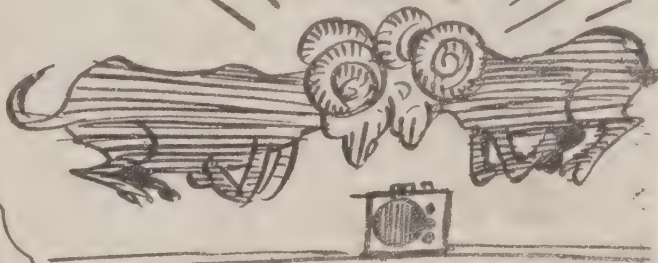
मेढ़ों को डिस्को म्यूजिक सुनाने पर वह ज्यादा जोर से आपस में भिडेंगे।

सांडों को म्यूजिक सुनाने पर वह एक जोरदार हूं करके नहीं रह जायेंगे। डिस्को प्रभाव में हूं ण्ट्र-टू की तीन, चार हुंकारों की शृंखला छोड़ेंगे।
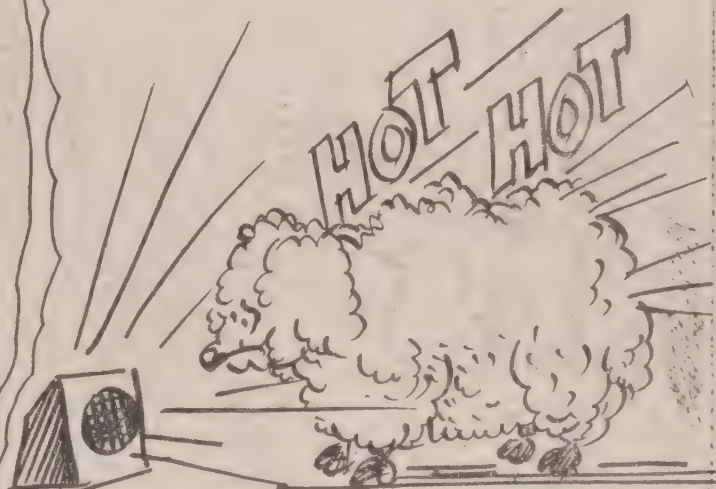
डिस्को म्यूजिक हाट होता है। भेड़ बकरों को सुनाने पर भेड़ें-बकरे ज्यादा ऊन पैदा करेंगे। ऊन भी तो गर्म कपड़े बनाने के काम आता है।

ऊँटों को डिस्को म्यूजिक सुनाया जाय तो रेगिस्तान में वह ज्यादा दूर का सफर करेंगे। डिस्को धुनों और ऊँट के कदमों में एक सा ही स्टेप होता है लगभग।

कपड़े धोते समय डिस्को म्यूजिक लगाने पर कपड़े उजले धुलेंगे। डिस्को की बीट पर कपड़ों की ज्यादा कुटाई होगी। हां यह बात अलग है कि बटन ज्यादा टूटेंगे।
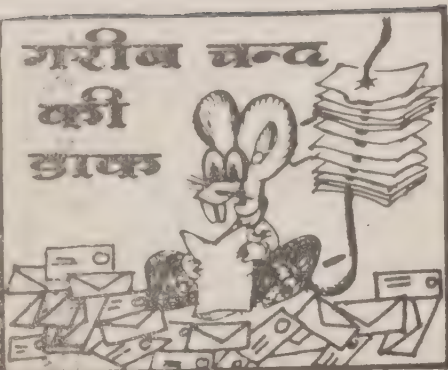
दलीप प्रासानी, कटनी (म०प्र) : अगर स्वर्ग तक पहुंचने के लिए सीढ़ियां बना दी गयी होतीं तो क्या होता ?

उ० : ठेकेदारों ने खुदा का दिवाला निकाल दिया होता ।

प्र० : गरीब चन्द जी, क्या स्वर्ग और नर्क वास्तव में होते हैं ?

उ० : स्वर्ग और नर्क तो ऊंचे दर्जे की चीजें हैं । अधिकांश भारतवासी जैसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं वह घोर नर्क है ।

प्रह्लाद जालवानी कृष्ण कन्हैया : गरीब चन्द जी, आजकल इन्सान प्यार से ज्यादा दौलत से क्यों मुहब्बत करते हैं ?

उ० : क्योंकि दौलत से प्यार भी खरीदा जा सकता है । प्यार से दौलत तो कमाई नहीं जा सकती ।

अशोक खुराना, कलानौर : मैं किसी का प्यार पाना चाहता हूं ? चाहे किसी रूप में हो ?

उ० : तो लीजिए हमारा प्यार । आपके प्रश्न के उत्तर के रूप में ।

श्याम गागनानी, अकोला : माई डीयर गरीब चन्द जी, आप पाठकों के सवालों का मीठा जबाब देते हैं क्या आप शक्कर (चीनी) ज्यादा खाते हो ?

उ० : मुंह में आंवला रखकर जवाब देता हूं । जब प्रश्न पैन से उतर रहे होते हैं तो कड़ुवे होते हैं । छपने पर मीठे लगते हैं ।

अशोक खुराना, कलानौर : आप बहुत गरीब हैं क्या? यदि कहो तो कुछ चन्दा इकट्ठा करके भेज दें ।

उ० : क्यों मेरे नाम चन्दा इकट्ठा करके उसमें घपला करना चाहते हो ? मेरे पास तो कमेटी बिठाने लायक नावां तक नहीं है ।

सुनील जैन सुनील, भिलाई : इस प्रकार है कि मेरा भतीजा और मैं दोनों एक लड़की को प्यार करते हैं । भतीजे को लड़की पैसे के कारण चाहती है । मेरे को रूप रंग के कारण उसे दोनों में किसे चुनना चाहिए ?

उ० आपके भतीजे को चुनना चाहिए । पैसा बहुत टिकाऊ चीज है । आपका रूप रंग तो दो दिन का मेहमान है । आपका रूप रंग न पाने का गम उसे इस लिए नहीं खलेगा क्योंकि जब वह आपके भतीजे से शादी करेगी तो ईर्ष्या के मारे आपका रूप रंग भुनकर खाक हो जायेगा ।

श्याम गागनानी, अकोला : इन्सान जब हर तरफ से निराश हो जाए तो क्या करे ?

उ० हर तरफ से निराश इन्सानों की ट्रेड यूनियन बना लें और हो सके तो अध्यक्ष बन जायें ।

अशोक मारकन्डे, राजेन्द्र नगर : गरीबचन्द जी, भंवरा फूलों पर ही क्यों मंडराता है ?

उ० क्योंकि फूलों के अन्दर उसका लंच और डिनर रखा है ।

राकेश अग्रवाल, सफींदो : शराबी को शराब नहाने से पहले पीनी चाहिए या बाद में ?

उ० : पहले बाद में का क्या सवाल है । शराबी को शराब में ही नहाना चाहिए ।

राजेन्द्र बठला कलानौर : गरीब चन्द जी, क्या आप केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजे गये प्रश्नों का उत्तर देते हैं ?

उ० : हां । पोस्ट कार्डों का मटियाला रंग हमारे आफिस के फर्नीचर और दीवारों से बहुत मैच खाता है ।

अकील अख्तर, इन्दौर : टूटे दिल को लेकर कहां जायें ?

उ० : नजदीक के मयखाने में । वहां टूटे दिल के टुकड़े भी गाने लगते हैं । क्योंकि दिल के कई टुकड़ों से आवाज आती है अतः स्टीरियो इफैक्ट आ जाता है ।

केवल प्रकाश दुआ, काशीपुर : आखिर जब एक दिन मर ही जाना है तब पैदा होने का क्या मकसद है ?

उ० : विद्यार्थियों को परीक्षाओं में सताने के लिए इतिहास का मसाला तो तैयार करना है । इतिहास तभी बनेगा जब लोग पैदा होंगे व कुछ कारनामे करके मर जायेंगे ।

कृष्ण दुआ, मीनू, जीन्द : लड़कियां फैशन क्यों करती हैं ?

उ० : फैशन तो विज्ञापन है उस सामान का जिसे फैशन ने ढक रखा है । और यह युग तो विज्ञापनों का ही है ।

श्याम गागनानी, अकोला : घर में आग हो और बच्चे नादान हों, तो आप क्या करोगे ?

उ० बरनाल की ट्यूब हमेशा अपने घर में रखेंगे ।

राम कुमार पुसवानी : माई डियर गरीब चन्द जी, इतने पत्रों का जवाब आप देते हैं कि आपके सेक्रेटरी ।

उ० : मैं देता हूं । मेरा सेक्रेटरी तो एक तोता है जो दिन भर "जी सरकार, जी सरकार" रटता रहता है ।

रश्मि भाटिया, शंकर रोड : एक गरीब दूसरे गरीब से मांगे तो वह उसे क्या देगा?

उ० : जवाब दे देगा ।

श्याम गागनानी अकोला : इन्सान की जिन्दगी में लड़की व लकड़ी का कितना महत्त्व है ?

उ० : जिन्दगी में गर्मी चाहिए । और जिन्दगी के लिये यही दो ऊर्जा के स्रोत हैं ।

हर्ष स्तोलियान, चम्बा (हि०प्र०) : डीयर गरीब चन्द जी, मैं आपको चिट्ठी लिखना चाहता हूं । कृपया अपना पता बताइए ।

उ० : आप हमें यह बताइये कि आपने हमें ये जो कार्ड भेजा है उस पर जो आपने पता लिखा है वह आपको पसन्द नहीं आया ?

अनिल दुआ रायपुर : भारतवर्ष में आपकी संख्या कितनी होगी गरीब चन्द जी ?

उ० : मैं गलत आंकड़े नहीं देना चाहता । आपके प्रश्न पूछने और उत्तर के छपने के बीच में करोड़ों की संख्या घट बढ़ सकती है ।

सैयद बाकर हुसैन, आकोला : शादी के समय दुल्हन को हरे कपड़े क्यों नहीं पहनाते ?

उ० : शादी में दुल्हिन के बाप का खून चूसा जाता है । खून का रंग लाल होता है । यह उसी का प्रतीक है ।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

सिलबिल पिलपिल
पीपल का भूत

आपको यह जान कर खुशी होगी कि अपना यार्डी सुपरमैन सेंटम अब बेकार नहीं रहा। उसे एपाइंटमेंट लेटर मिल गया है। गांव चमरोधा की पंचायत ने अर्जी भेजा है कि उनके गांव के बाहर पीपल के पेड़ में रहने वाले भूत ने गांव वालों को बोत परेशान कर रखा है।
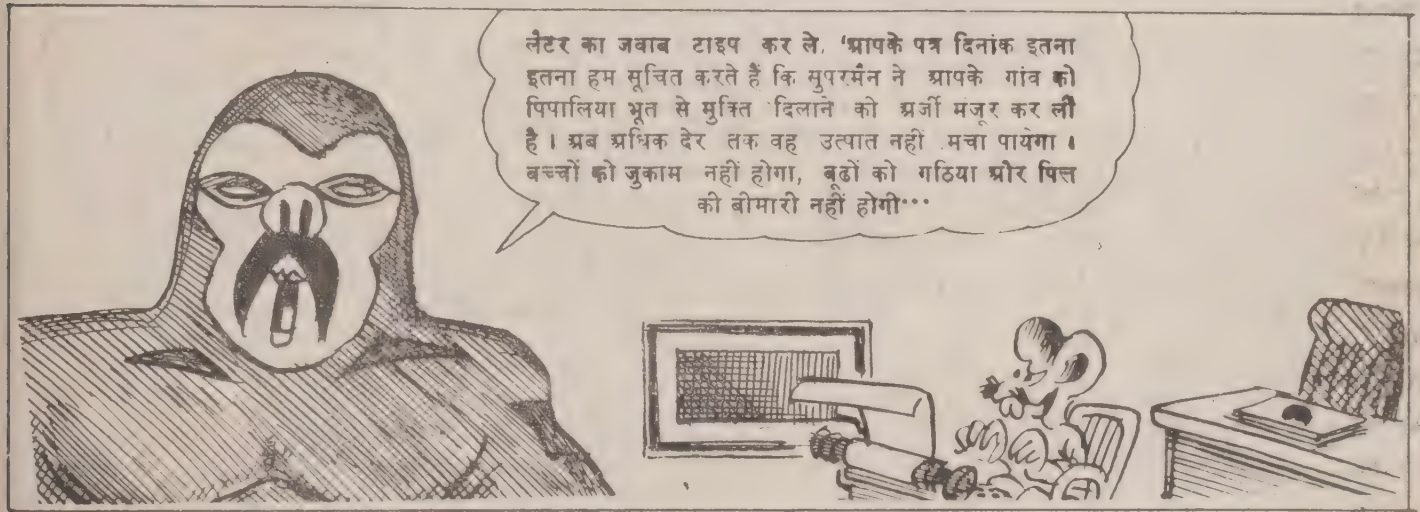
लेटर का जवाब टाइप कर ले, 'आपके पत्र दिनांक इतना इतना हम सूचित करते हैं कि सुपरमैन ने आपके गांव को पिपालिया भूत से मुक्ति दिलाने को अर्जी मंजूर कर ली है। अब अधिक देर तक वह उत्पात नहीं मचा पायेगा। बच्चों को जुकाम नहीं होगा, बूढ़ों को गठिया और पित्त की बीमारी नहीं होगी···

लिखा है कि रात भर पेड़ से हंसने की आवाज आती है।
दीवाना पढ़ता होगा।
दीवाना पढ़ता होता तो गरीबचंद की डाक में मुझसे कोई प्रश्न पूछ लेता।

और रात को आग की लपटें उठती हैं और अंगारे बरसते हैं।
बेचारे के पास गैस नहीं होगा। चूल्हे पर खाना बनाता होगा।

चलने से पहले हमें उन चीजों की फेहरिस्त बनानी चाहिए जो हमें साथ ले जानी हैं। डमरू, चिमटा, बिस्कुट···
चिमटा से क्या उसकी नाक पकड़नी होगी?

चूहे बड़ा अजीब-सा लग रहा है कि हम गधे पर जा रहे हैं। फैंटम तो घोड़े पर सवार होकर जाता है न।
दिल्ली के सारे घोड़े एशियाई खेलों में लगे हैं।
बस यह गधा ही तो बचा था।

वह रहा भाई गाम चमरोधा। सड़क के किनारे पंचायत वालों ने बोर्ड लगा रखा है और वह पीपल का पेड़। वही होगा इसका हुलिया पत्र में लिखे पेड़ के हुलिये से बिल्कुल मिलता है।

नही भई ! अभी तो दिन का उजाला है। सूरज की रोशनी में भूत नही निकलते । वह तो रात को ही अपना वैरायटी प्रोग्राम पेश करते हैं। नाइट शो करते है ।
इस वक्त तो कोई भूत-वूत नजर नहीं आता। कही हमारे आने की खबर सुनकर पहले ही गायब तो नहीं हो गया।
तो क्या हमें दिन भर यहां बैठ कर वेट करनी पड़ेगी। गांव वालों से बात तो कर लेते कि यही पेड़ है या कोई और ?

क्यों जी आप ही लोग हैं जो शहर से पीपल के भूत से लड़ने के लिए आये है
हां ! तुम इसी गांव के बच्चे हो ?
हां जी, मैं नम्बरदार का लड़का हूं।

अच्छा बच्चों जाओ अपने-अपने घर, यह बच्चों का खेल नही है। भूत-प्रेत की बात है।
हम तो देखने आये थे कि शहर का ओझा किस तरह भूतों से लड़ता है।
हम लड़ाई की वीडियो रिकार्डिग बाद में पंचायत भवन में दिखायेंगे।

यहां तुम्हारी जान को खतरा है ! सुपरमैन सैंटम और पीपल के भूत के बीच जो जंग होगी वह दिल दहला देने वाली होगी। चारों दिशायें कांप उठेंगी, धरती डोलेगी, हजारों गीदड़ और सियार एक साथ बोल उठेंगे। सुरक्षा परिषद की आपातकालीन बैठक होगी और न जाने क्या-क्या होगा ?

दूरदर्शन और आकाशवाणी अपने नियमित प्रसारणों को रोक कर नेशनल हुक अम्पायर लड़ाई की ताजा-ताजा खबरें लोगों को सुनायेंगे। बी.बी.सी. और न्यूयार्क के टाइम्स के संवाद-दाता टेन्ट गाड़ कर पीपल के पेड़ के पास बैठ जायेंगे।

चूहे, बड़ी खुशी की बात है कि कोई सुपरमैन आकर भूत से लड़ने वाला है। लड़ाई का जो नजारा तूने खींचा उसे सुनकर मुझे जंगल दिशा जाने की हाजत होने लगी है। कौन सुपरमैन है जो ऐसी जंग करेगा ? मैं तो डर रहा था कि भूत से निबटना पड़ेगा।
बेवकूफ तू ही तो है सुपरमैन और दूसरा कौन आएगा ?

पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये।

भारतीय क्रिकेट टीम का पाकिस्तान दौरा

कार्यकम सूची

नवम्बर 29 से दिसम्बर 1	—	क्वेटा में तीन दिवसीय मैच
दिसम्बर 3	—	गुजरांवाला में एक दिन का अंतर्राष्ट्रीय मैच
दिसम्बर 5 से 7	—	रावलपिंडी में तीन दिवसीय मैच
दिसम्बर 10 से 15	—	प्रथम टैस्ट मैच लाहौर में
दिसम्बर 17	—	मुल्तान में एक दिन का अंतर्राष्ट्रीय मैच
दिसम्बर 18 से 20	—	सक्कूर में तीन दिवसीय मैच
दिसम्बर 23 से 28	—	फैजलाबाद में दूसरा टैस्ट मैच
दिसम्बर 31	—	लाहौर में एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय मैच
जनवरी 3 से 8	—	कराची में तीसरा टैस्ट मैच
जनवरी 10 से 12	—	रावलपिंडी में तीन दिवसीय मैच
जनवरी 14 से 19	—	रावलपिंडी में चौथा टैस्ट मैच
जनवरी 21	—	कराची में एक दिवसीय मैच
जनवरी 23 से 28	—	हैदराबाद में पांचवा टैस्ट मैच
जनवरी 30 से फरवरी 4	—	कराची में छटा टैस्ट मैच

बलविन्दर सिंह संधु
बम्बई के मध्यम
गति के तेज गेंदबाज

मनिन्दर सिंह
दिल्ली के
बायें हाथ के स्पिनर

शिवारामाकृष्णान
तमिलनाडू के
लैग स्पिनर गेंदबाज

चना कुरमुरा

साठ वर्ष की एक छोटी सी महिला ने वायुयान सेवा रिजरवेशन क्लर्क से पूछा, 'तुम्हारा कहने का मतलब है हमें लन्दन तक की उड़ान में केवल छः घन्टे लगेंगे'।

'बिलकुल ठीक,' क्लर्क ने उन्हें आश्वासन दिया। एक क्षण रुकने के बाद महिला बोली, 'फिर तो मैं बोट से जाऊंगी'।

'परन्तु आप यह तो सोचें कि वायुमान से जाने पर आपका कितना समय बच जायेगा'।

'नवयुवक'! वे तुरन्त बोलीं, 'तुम्हारी उम्र से ही मैं समय बचाती आ रही हूं, अब मैं कुछ समय खर्च करना चाहती हूं।'

●

एक क्लॉक रूम की देख भाल करने वाले ने एक बूढ़े सज्जन को उनका ओवर कोट दिया।

सज्जन ने चौकीदार से पूछा, 'तुम्हें कैसे मालूम है यह कोट मेरा है?'

'मुझे नही मालूम,' चौकीदार ने सहमत होते हुए कहा। 'फिर यह तुमने मुझे क्यों दे दिया?' सज्जन ने पूछा।

'क्योंकि यह आपने मुझे दिया था' चौकीदार बोला।

अपने चोरी हुए जेवरात के लिए इन्शोरेंस कम्पनी से दस हजार रुपये पाने के बाद एक मजेदार बूढ़ी महिला ने कम्पनी को लिखा कि उसके जेवरात उसे अलमारी में रखे हुए मिल गये हैं।

'मैंने सोचा जेवर और रुपये दोनों को ही रख लेना ठीक न होगा इसलिए आपको जानकर खुशी होगी कि दस हजार रुपये मैंने रेडक्रास को भेज दिये हैं।'

●

साइंस टीचर—क्या कोई बता सकता है तब क्या होता है जब आदमी का शरीर गरम पानी में डूबा होता है।

छात्र—टेलीफोन की घण्टी बजती है।

फैण्टम - गुमनाम कमाण्डर

ललोन्गो के ललोन्टो फ़ैन्टम को बुलाते हैं।
फैन्टम सिर की चोटी को तेजी से पार करते हुए
फुस फुसाती गुफाओं

से आगे पन्ने की झोंपड़ी और कीला वी के सुनहरी समुद्र तट से भी आगे
FALK BARRY 11/14

फैन्टम !! आखिर आ गये। हमारा राजा तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।
© 1980 King Features Syndicate, Inc. World

ललोन्गो ललोन्टो के राजा
तुम हवा के समान आये हो, ओ चलते फिरते भूत, धन्यवाद।
मेरा पुत्र, मेरा वारिस ललोनी।
प्रिय मित्र ललोन्टो, तुम्हें क्या परेशानी है?
FALK & BARRY 11/15
मुझे वह याद है एक बढ़िया नौजवान।
© 1980 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved
उसने एक बूढ़े आदमी पर हमला किया, उसे लूटा और उसकी हत्या का प्रयास किया।
क्या यह एक अच्छे नौजवान के गुण हैं।

राजा ललोन्टो तुम्हारे पुत्र ने एक बूढ़े आदमी को लूट कर उसकी हत्या करने की कोशिश की?
मुझे शर्मिन्दगी से मानना पड़ता है यह सच है!
क्या यह वही पुत्र है जो एक उत्तम ऐथीलीट है?
वही ललोनी!
उस ने आग दीवार को कूद कर पार करने में जीत हासिल की थी!
पिछले जंगल ओलम्पिक्स में
FALK & BARRY 11/17

मैंने सोचा था कि हम कभी यहां पहुंचेंगे नहीं!
ललोनी धीरे चलो, कोई हमारा पीछा नहीं कर रहा!
'जाकलु' क्या मैं सचमुच उस बूढ़े को मारना चाहता था?
यदि मैं तुम्हें रोक न देता तो
मैं ऐसा क्यों करता, शायद मेरा दिमाग खराब हो गया।
लड़के! शान्त हो। यह गोलियां ले लो, तुम्हें आराम मिलेगा।

मूवी मसाला

मैक मोहन को भूखे ही सोना पड़ा—

शायद कुछ ही लोग जानते होंगे की मैक मोहन के पिता मिलिट्री के एक रिटायर्ड अफसर हैं और मैक की बहन का विवाह डायरेक्टर रवि टंडन से हुआ है। पिता की आयु लगभग 90 वर्ष की है पर अभी भी व्यवहार बिल्कुल पुराने दिनों जैसा ही है। उन्हें बेकार फेंकने पर विश्वास नही है इसी कारण घर के हर सदस्य को सुबह रसोइये को बता कर जाना होता है कि वह भोजन घर पर करेगा या बाहर ! एक दिन भूखे मैक मोहन शूटिंग से कुछ देर से घर पहुंचे। वे रसोइये पर गुस्सा हो रहे थे कि उनके लिए पूरा भोजन क्यों नहीं रखा ? हल्ला-गुल्ला सुन मैकमोहन के पिता उठे और फ्रिज में रखा बचा खुचा भोजन निकाल कुत्ते को जगाकर खिला दिया। फिर वे मैकमोहन पर चिल्लाये।

'तुमने जाने से पहले हमें बताया क्यों नहीं था कि तुम घर पर ही भोजन करोगे ?' 'तुम्हें एक टुकड़ा भी नहीं मिल सकता।' बेचारा मैकमोहन,उसे भूखे पेट ही सोना पड़ा। नौजवानों के लिए अच्छा सबक !

तनूजा जीनत के खिलाफ—

ओ. पी. रलहन की फिलम 'प्यास' में काम करते हुए तनूजा ने बहुत कोशिश की कि जीनत का रोल कम कर दिया जाये। पर अपनी भरसक कोशिश के बावजूद भी वे कामयाब नहीं हो पाई। अब वे सारे में कहती फिरती हैं कि जीनत बिल्कुल बेकार अभिनय करती है। वास्तव में यह बात उसने शूटिंग के दौरान स्वयं जीनत्त के मुंह पर भी कह दी। 'क्या तुम्हें नहीं मालूम कि जहां तक एक्टिंग का सवाल है, तुम एकदम बेकार हो' और तुम्हारी सफलता का राज है तुम्हारा अपने शरीर का प्रदर्शन तथा तुम्हारी अर्ध नग्न ड्रैसेज।' सारा यूनिट यह सुन हक्का-बक्का रह गया। डायरेक्टर रलहन ने सोचा शायद जीनत तनूजा को चांटा ही मार देगी। उस दिन की शूटिंग अचानक बन्द कर देनी पड़ी, जिससे रलहन को काफी नुकसान हुआ।

पर रलहन ने क्या किया ? क्या वे चुपचाप तमाशा देखते रहे ? नहीं उनका बदला लेने का अपना ही मीठा तरीका है। उन्होंने जीनत को खुश करने के लिए तनुजा का रोल काट कर कम से कम कर दिया। कहा जाता है राज कपूर ने भी तनूजा की बकवास के कारण 'प्रेमरोग में रोल काट दिया था-- कुछ लोग कभी नहीं सीखते।

कल्पना नग्नता के हक में—

जब मैंने कल्पना ऐयर से कहा कि लोग उसकी सबसे अधिक शरीर खोलने पर निन्दा कर रहे हैं तो उसने गुस्से से पूछा 'लोग ? कौन लोग ? मुझे मालूम है, यह वही लड़कियां हैं जिन्हें मैंने फिल्मों से बाहर धक्का दे दिया है, वे ही मेरे खिलाफ हैं। मैं वही करती हूं जो मैं चाहती हूं मैं दूसरों की तरह धोखेबाज नहीं हूं। मैं अल्ट्रामोर्डन लड़की हूं, हालांकि मेरा परिवार पुराने विचारों का है। मेरा शरीर सुन्दर है जिसे मैं नाम, यश और पैसे के लिए बेचती हूं। दूसरे अपनी मोटी कमर दिखाने में असमर्थ हैं, यह मेरा कुसूर नहीं है।'

और नग्नता की बात करते हो तो बताओ जीनत 'अबदुल्ला' फिल्म में 'पानी में जल जाये मेरी काया' गाना गाते हुए क्या करती है, या फिर पद्-मिनी को 'जिस देश में गंगा बहती है' में वह गाना गाते हुए देखो 'ओह मैंने प्यार किया' और 'मैं सुन्दर हूं' का वह गाना 'मुझें ठंड लग रही है, 'मुझ से दूर तो न जा'। बात सिर्फ इतनी है कि मैं ईमानदार हूं, मैं दिखावा नहीं करती, 'न ही मैं सती सावित्री हूं'।

हंसना मना है
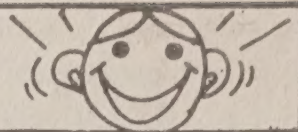
लोकेश : 'तो तुमने अपनी पत्नी को 'प्रोकर' खेलना सीखा दिया ?'

रमेश : 'हाँ, बहुत ही बढ़िया विचार है। पिछले शनिवार मैंने अपनी एक तिहाई तनख्वाह वापिस जीत ली।'

●

एक पेन्टर की चोरी हो गई। पुलिस की चोर पकड़ने में सहायता करने के लिए पेन्टर ने चोर का एक चित्र बना कर उन्हें दे दिया। बिल्कुल इस चित्र के आधार पर चल कर पुलिस वालों ने, एक टी. वी. का एरियल, तीन डिब्बा खोलने वाले, एक घोड़ा और दो जोड़े जूतों को गिरफ्तार किया।

●

इन्शोरेन्स एजेन्ट—'आपका कितना वजन है ?'

बीमा करवाने वाला—'एक सौ पिचानवे, चश्मे के साथ।'

एजेन्ट—'चश्मे के भार को मिलाने की क्या जरूरत है ?'

बीमा करवाने वाला—'क्योंकि बाथ-रूम में लगा हुआ काँटा मैं चश्में के बिना पढ़ नहीं सकता।'

●

'जौनी, लगता है कल रात की कन्वेंनशन में तुमने अपना अच्छा तमाशा बनाया था। मुझे पता चला है कि तुम सड़क पर जोर-जोर से गाते हुए व्हील-बैरो लिए हुए जा रहे थे। तुम्हें इस बारे में क्या कहना है ?'

'ठीक है, बॉस, मेरे विचार से ऐसा ही हुआ था, मेरे ख्याल से मैंने कुछ पी अधिक ली थी।'

'यह कोई सफाई नहीं है, जरा सोचो तुमने सारी कम्पनी की बदनामी करवाई है। उसका क्या होगा ?'

'हां। पर मेरे ख्याल से इससे कुछ फर्क नहीं पड़ रहा था क्योंकि आपने ही मुझे आपको व्हीलबैरोपर बिठा कर सैर कराने का हुक्म दिया था।'

●

एक पति, पत्नी में जोरदार बहस हो रही थी जब अचानक पत्नी रुककर बोली, 'अब आपसे किसी विषय पर बात चीत करना बिल्कुल बेकार है, हम दोनों एक बात पर कभी एक राय नहीं हो सकते।'

'यहां तुम गलती कर रही हो', वह बोला, उदाहरण के लिये, यदि हम दो पलंग लगे एक कमरे में दाखिल हों और एक पर एक पुरुष और दूसरे पर स्त्री लेटी हो, तो तुम किस के साथ सोना पसन्द करोगी ?'

'क्यों, बेशक स्त्री ही के साथ', उसने जवाब दिया दिया।

'देखा तुमने, हमारी एक ही राय है।'

●

एक सेल्स मैनेजर अपने होटल के कमरे को छोड़ कर जा रहा था। बिल वगैराह अदा कर देने के बाद वह होटल मैनेजर के पास पहुंचा और उसे फूलों का एक गुलदस्ता दिया, और बोला 'यह फूल टेलीफोन वाली लड़कियों के लिये हैं।' 'धन्यवाद श्रीमान्, वे इन्हें पाकर बहुत खुश होंगी।' 'मैनेजर बोला 'वे आपकी सराहना की कदर करेंगी।'

'सराहना, ग्राहक बोला' मेरा ख्याल था वे सब मर गई हैं।'

●

पिता—(होटल के बैरे से) बाकी बचा हुआ गोश्त हमारे कुत्ते के लिए, बांध दो।

छोटा पुत्र—'ओह गुड! अब हमारे घर कुत्ता आयेगा।'

●

'तुम्हारा कैसा हाल-चाल चल रहा है ?' एक बूढ़े सेल्समैन ने नये आये से पूछा। 'बहुत अच्छा नहीं है, मैं जहाँ भी गया वहीं मेरी बेइज्जती हुई।'

'बड़ी अजीब बात है' बूढ़े आदमी ने उत्तर दिया 'मैं तो लगभग 40 वर्ष यह कार्य करता रहा। मेरे सैम्पल सड़क पर फेंके गये। सीढ़ियों से नीचे भी फेंका गया, जैनीटर द्वारा मुझे धक्के दिये गये और नाले में भी फेंका गया पर बेइज्जती ? कभी नहीं हुई।'

●

सन् १९७६ की पोलैंड की हड़ताल के बाद तीन गिरफ्तार पोलिशवर्कर इत्तफाक से जेल के एक ही सैल में इकट्ठे हो गये जहां उन्हें मुकदमे की प्रतीक्षा करनी थी। पूछताछ के पश्चात् उन्होंने आपस में अपने पर लगे इलजामों के बारे में बात की, "मुझ पर इकनौमिक तोड़फोड़ का इलजाम है", पहला बोला। "मैं काम पर देर से पहुंचा था क्योंकि मेरी घड़ी सुस्त थी"। "मेरा इलज़ाम इससे बिलकुल उलटा है" दूसरा बोला, "एकदिन मैं फैक्टरी बहुत जल्दी पहुंच गया क्योंकि मेरी घड़ी तेज़ थी, इसलिये मुझ पर इकनौमिक जासूसी का इल्जाम लगाया है"।
तीसरा बोला मेरा केस तो और भी ख़राब है मेरी घड़ी बिलकुल ठीक समय दे रही थी उन्होंने देखा कि यह वैस्टर्न बनी है, तो अब मैं सी आई ए. का जासूस मान लिया गया हूं।

●

एडजटेंट कम्पनी कमांडर ने मुझ से पूछा रिपोर्ट में इतनी सारी गल्तियां क्यों हैं?
"श्रीमान्, मैं बोला, आपको इस बात को समझना चाहिये कि चार मूर्ख मेरे साथ काम कर रहे हैं।"
कमांडर ने अपना सिर ऊपर कर मेरी ओर देखा और कहा, "किस्मत वाले हो, मेरे साथ तो पांच मूर्ख काम कर रहे हैं।"

●

घंटी बजी, ग्रहणी ने घर का दरवाजा खोला तो दो भिखारी खड़े थे।
"तो अब तुम दो-दो इकट्ठे हो मांगने लगे हो?" "नहीं! केवल आज, मैं अपने ऐवजी करने वाले को छुट्टी पर जाने से पहले घर दिखाने लाया हूं।"

●

"रात को जब तुम आये थे तब शायद मुझे दो घंटे सुनाई दिये थे?" पत्नी ने पति से नाश्ते की मेज पर पूछा!.

"बेशक, प्रिये, "पति ने प्यार से उत्तर दिया" दस बजने शुरू हुए और तुम्हारी नींद खराब न हो जाये इसलिये दो घंटे बजते ही मैने घड़ी बन्द कर दी।"

●

★ पर्दा-पार्टी ★

—शिबरेना

महंगाई-भत्ते की चौथी किस्त मिली, तो हम इकलौती बीवी और बच्ची सहित, एक रेस्तरां में अमीर आदमी बनने की रिहर्सल करने लगे। हल्के संगीत, मद्धिम रोशनी और हाल-कमरे में टंगे विशालकाय रंगीन पर्दों से, वातावरण रोमांटिक हो रहा था। बच्ची गुब्बारे से खेलने लगी, तो हमने पुत्रीवती बीवी का हाथ दबाकर कहा : 'बोलो डार्लिंग, क्या खाओगी ? आईसक्रीम मंगाऊं या रसमलाई ?'

श्रीमती जी के गालों पर लाज का हल्का सिंदूर छिटक गया। विशुद्ध हनीमूनी मुस्कान सहित बोलीं : 'पार्टी दे रहे हैं, तो पूछने की बात क्या है, जी ? हमारी खुशियां और पसंदें भी तो एक ही हैं ! कुछ भी मंगा लीजिये।'

हमने अभिनेता मोहन चोटी की तरह खीसें निपोरकर नारा लगाया : 'बैरा ! दो प्लेट रसमलाई लाओ !'

तभी बगल के नन्हे केबिन में से, दरम्यानी पर्दे को चीरती एक जनाना आवाज आई : 'अगर पार्टी हो रही है, तो हमें भी तो शरीक होने का मौका दीजिए !' इसके साथ ही, लड़कियों का एक तेज-तर्रार ठहाका सुनाई दिया।

चौंककर, हमने इधर से जवाब दिया : 'आप मजे से रसमलाई खाइये; मगर यह पार्टी होगी किस खुशी में ?'

'आपके लड़के की खुशी में !' जवाब मिला।

हमने चिहुंक कर कहा : 'हम तो एक अदद बच्ची के पिता हैं।'

जवाब आया : 'यह तो और भी अच्छी बात है। हमारी मुबारकबादों से, आपके यहां पुत्र-रत्न भी जरूर होगा !'

हमारी श्रीमती जी नाराज हो गईं; मगर हमने जामे से बाहर होकर, 'पर्दे के पीछे वालों के लिए एक दर्जन रसमलाई की प्लेटों का आर्डर दे दिया।

रसमलाई श्रीमती जी भी खा रही थीं; मगर उन्हें सांप सूंघ गया था—कुछ हमारे 'अपव्यय' के कारण, और अधिक ईर्ष्यावश। पर्दे के पीछे वाले केबिन से 'थैंक यू', 'शुक्रिया', 'धन्यवाद', 'आप सपरिवार-सलामत रहें, और 'आप लड़के के बाप बनें, के आशीर्वाद बरसते रहे। मगर हमारी श्रीमती जी पर (हमारी लाख कोशिशों के बावजूद) खाक 'अच्छा असर' न हुआ। वे रोमांटिक से 'कैकेयी-ब्रांड गुस्सैल' रूप में आ गई थीं। हमारी 'टें' बोल गई।

पौन घण्टे बाद, हम मुंह पोंछते हुये, जल्दी-जल्दी बिल चुकाकर, केबिन से निकले। क्योंकि एक मिनट पहले ही 'थैंक्स' कहकर कालेज की वे हसीनायें भी रेस्तरां से बाहर निकली थीं। श्रीमती जी की घुड़कियों और जानलेवा चुप्पी के बावजूद, हम एक नजर उन कुंवारी लड़कियों को देखना चाहते थे, जो हमारे खून-पसीने का 'नमक' खाकर, नौ-दो ग्यारह हो रही थीं।

चुनांचे, बीवी-बच्ची को जरा पीछे छोड़कर, बाथरूम के बहाने, हम आगे लपके, तो लपकते ही रह गए !

कालेज की छोकरियों के बजाय, छह अदद अधनंगे हीजड़े मुंह पर हमारी रसमलाई मले, मटकते चले जा रहे थे !

हमने बीवी से इस फजीहत के बारे में बात ही नहीं की—और बीवी ने मात्र इस बहम में पूरा एक हफ्ता हमसे किनारा-कशी कर ली कि हम कालेज-गर्ल्ज पर डोरे डाल रहे हैं ! ●

अंक १८ पहेली का हल

च	व्ह	ल	प	ह	ल
ठ	मा	ट	र	■	ह्
का	म	■	म	च	ल
रे	■	चौ	■	रं	हा
ले	ट	क	र	वा	ना
ना	ग	री	■	हा	■

(निर्णय लाटरी द्वारा)

विजेता : दीपू द्वारा - एन. एस. डी. अग्रवाल, 18-ए,/12 रेलवे कालोनी, गोरखपुर।

अंक २० पहेली का हल

मे	हं	न	त	क	श
म	ठ	■	क्लि	■	की
ना	■	मा	था	ना	ल
■	ढ	न	क	ना	■
सि	ल	सि	ला	■	ग
या	■	क	म	रि	न

(निर्णय लाटरी द्वारा)

विजेता . गुलशन पामर, आजाद भवन, मुक्तसर (पंजाब) 520261

अरुण कुमार, नेशनल प्लास्टिक क्रिदानप्पा मैस्ट्री स्ट्रीट, मद्रास, 19 वर्ष, पत्र-मित्रता । विकास कुमार बाहटा, चिल्ड्रन क्लब, निर्मली (महरसा), 15 वर्ष, फिल्म देखना । जगदीश करनाणी, 34/1, ब्रन बिहारी बोड रोड, हावडा, 19 वर्ष, दोस्ती करना । जयकिशन टोपनदास पहिलवानी 80-बी, प्रेमनगर, इन्दौर, 10 वर्ष, रेडियो सुनना । मोहन कृष्ण डंगोल, 18/69, महाराज गंज, काठमांडो, नेपाल 19 वर्ष, फिल्म कलाकार बनना पढ़ना, नवीन कृष्ण गोयल, बड़ी मंडी, हापुड़, 19 वर्ष, विज्ञान पत्रिका पढ़ना, बैंड मिन्टन खेलना । गुलशन पामर एम. ए., आजाद भवन, मुक्तसर, 21 वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता करना ।

शैलेश कुमार शर्मा, डी. डी. 5, मदनपुरा, मोदीनगर, 17 वर्ष, पत्र-मित्रता करना । किरण सायमी, के के स्टोर्स, टेफू, काठमांडो, 19 वर्ष, संगीत सीखना व सिखाना । सन्त प्रकाश सिंह, विजय स्टूडियो, स्टेशन रोड, गाजीपुर, 22 वर्ष, टिकट, सिक्के संग्रह । नरेन्द्र पाल सिंह, द्वारा सुरजीत सिंह, जिला कारागार, गाजीपुर 18 वर्ष, डिस्को डांस । अब्बास नसीम तलिक चौक, महादेवपुरा, वर्धा, 18 वर्ष, दीवाना पढ़ना । अमोद सिमार्जण्डा, 16 कैलाश, 6 तानसेन पाल्पा, नेपाल, 18 वर्ष, टिकट संग्रह करना । ब्रजेश बसंल, पत्थर वालान, मेरठ शहर (उ० प्र०), 20 वर्ष फरमाईश भेजना ।

यश नागपाल, जी. टी. रोड, मिलट गंज, डबल फाटक, लुधियाना, 17 वर्ष, क्रिकेट खेलना । विपिन कुमार कक्कड़ 77-बी, नई मण्डी, मु० नगर (उ० प्र०) 18 वर्ष, नया आविष्कार करना । प्रमोद कुमार लामा, न्यू गणेश होटल, भीरे बहाल काठमांडो, 17 वर्ष, पत्र-मित्रता करना । अरुण कुमार मिश्र, के-26, क्रास रोड, जमशेदपुर, बिहार, 17 वर्ष, समाज सेवा । ए. के. खुराना, डिपु नं० 3, कलानौर, रोहतक, 31 वर्ष, पत्र-मित्रता करना, घूमना । प्रदीप सचदेव 472/5, राजा पार्क, आदर्श नगर, जयपुर, 18 वर्ष, दीवाना पढ़ना, दोस्ती । तेजपाल भारती 'पप्पू' ए-71, माता सुन्दरी रोड, नई दिल्ली, 18 वर्ष, पत्र लेखन ।

किशनपाल सिंह, 257 सेन्ट्रल बैंक के पास, घौंडा दिल्ली, 23 वर्ष, नावल पढ़ना, फोटोग्राफी । वी. पी. तंवर, 257, सेन्ट्रल बैंक के पास घौंडा दिल्ली, 18 वर्ष, दीवाना पढ़ना । संतोष कुमार माहेश्वरी, गांधीनगर फीरोजाबाद, वर्ष, दीवाना पढ़ना । 9, विष्णु कुमार खेतान, 28 गोमती 25 सदन, लखनऊ, 20 वर्ष, पत्र-मित्रता, दीवाना पढ़ना । नन्दलाल गोयल, 484, दादाबाड़ी, कोटा, 15 वर्ष, दीवाना पढ़ना, दोस्ती करना । धर्मेन्द्र सिंह राठौर, 12 शिवाजी मार्ग, आली राजपुर (म. प्र.), 18 वर्ष, क्रिकेट खेलना । कमल सेठिया, के. जे. सेठिया फैन्सी बाजार, गुवाहाटी, 15 वर्ष, पत्र-मित्रता करना ।

मास्टर सिपी, झुंझनूं (राज०) 24 वर्ष, 'पुष्प' पौधे लगाना पुष्प के साथ हंसना । राजेश कुमार अग्रवाल, स्नो व्हाइट ड्राई क्लीनर्स, रायगढ़, 21 वर्ष, क्रिकेट खेलना । अनिल दुर्गा, किशोर सदन, नथ्थानीवाड़ा, रायपुर, 18 वर्ष, दीवाना पढ़ना । अनिल कुमार पुरोहित, द्वारा एम. एल' पुरोहित, गांधी मार्ग, सुजानगढ़, 17 वर्ष, जासूसी । तेजेन्द्र शर्मा 'अकेला' सुनारों की गली, सम्भल, मुरादाबाद, 20 वर्ष, पत्र-मित्रता करना । दीपक वर्मा, राज फोटो स्टूडियो मोदीनगर, 18 वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना । अजय पंवार, गवर्मेन्ट डिग्री कालेज, सोलन, 16 वर्ष, डाक टिकट संग्रह करना ।

हरजीत सिंह हीरो 132, तेज नगर, अमृतसर, 18 वर्ष, पत्र-मित्रता, क्रिकेट खेलना । निर्मल कुमार केसरी जापुरिया हाट, बर्द्धवान, 19 वर्ष, कैरम खेलना । कमल आजाद, पी० दुलियाजान आसाम, 19 वर्ष, नाटक खेलना । सुरेन्द्र कुमार वर्मा, पूनम वेंरा-दौड़ना, यटी स्टोर, पत्थर वालान, मेरठ शहर, 20 वर्ष, किताबें पढ़ना । सैयद सादिक अली, खादिम मो. मेहमान मंजिल, इमामबाड़ा, अजमेर, 19 वर्ष, गिटार ।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ————————
पता ————————
————————
आयु ———— शौक ————

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता